अगस्त २००१ Rs. 10/-

चन्दामामा

We had, on behalf of our readers who expressed anxiety, written to the Prime Minister, Shri Vajpayee, wishing him speedy recovery from his recent surgery. His response printed on this page is full of appreciation of and encouragement to the task undertaken by *Chandamama* to provide insights into India's heritage. As we express our gratitude to him, and share the message with our readers, we rededicate ourselves to the objectives of the founders to promote national integration through this multi-lingual magazine. **-Editor**

प्रधान मंत्री
Prime Minister

New Delhi
June 23, 2001

Dear Shri Reddi,

Thank you for your kind letter dated June 16, 2001 conveying the good wishes of the readers of *Chandamama* for my speedy recovery after the recent knee surgery. I appreciate their warm and affectionate sentiments and reciprocate the same.

I am delighted to know that *Chandamama*, which has mesmerized millions of students with stories drawn from India's rich cultural heritage has successfully re-launched itself in twelve language editions. What has especially gladdened me is that you have also started to publish a Sanskrit edition of the magazine to popularize this ancient but ever-living language, which is the basic source of our culture and philosophical heritage.

I admire your courage and commitment since this must be a difficult task for you. However, knowing that you have the benefit of the collaboration of Sanskrit Bharati in New Delhi, which has been doing commendable work in taking Sanskrit to the masses, I am sure your effort will bear fruits.

The task of providing greater patronage and promotion to Sanskrit has to be shared by the Government as well as non-governmental agencies, especially, the mass media. *Chandamama's* bold effort, therefore, deserves our highest appreciation.

With best wishes,

Yours sincerely,

(A.B. Vajpayee)

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०५ अगस्त - २००१ सञ्चिका - ८

भारत की गाथा २९

गणपति बप्पा मोरया २४

पंडित की पहचान १९

अनोखा ज्योतिषी ३८

★ मानव प्रतिमाएँ ...७ ★ यक्ष पर्वत ...११
★ संकोची दामाद ...१८ ★ बेताल की कथा ...१९
★ गणपति बप्पा मोरया ...२४ ★ खुशी बाँटना ...२८
★ भारत की गाथा ...२९ ★ ओडिसी नृत्य ...३४
★ तेनालीराम ...३६ ★ अनोखा ज्योतिषी ...३८
★ समाचार झलक ...४४ ★ घास का लबादा ...४६
★ अपने भारत को जानो ...५० ★ देवी भागवत ...५१
★ कृष्णभूपति ...५६ ★ अजेय गरूड़ा ...६२
★ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...६६

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

एक नया रूप

देश की आजादी के साथ-साथ चन्दामामा के संस्थापक का प्रयास था कि चन्दामामा का प्रारम्भ एक सुघड़ तरीके से सांस्कृतिक आदान-प्रदान करने का मार्ग हो।

एक था बच्चों को यह बताना कि सम्पन्न परम्परा के साधु, ऋषि और शासकों ने जो बनाया उसे अपनाना, मानवता के उन सारे सिद्धांतों को मानना जो लोगों को करीब लाते हों। उनके मार्ग का अनुसरण करके संस्थापक ने भी कहानी, किस्सों तथा चित्रों के द्वारा विशेष अंकों को निकालकर एक अच्छा कार्य किया। जिससे पाठकों के दिल में अच्छे भाव पनपे और वे समाज के अच्छे इन्सान बने।

दूसरा प्रयास यह था कि पाठकों को उनकी सरल भाषा में पत्रिका दी जाए। जिससे वे उसे पढ़ें और आनन्द उठाए। इसी प्रकार से पत्रिका के अनेक भाषाओं में अंक प्रकाशित हुए।

समय के अनुसार इस पत्रिका में कई तरह के लेख प्रकाशित हुए। जिसके कारण अनुवाद के बाद कई लेख सभी भाषाओं में प्रकाशित हो गए। कई बार ऐसा हुआ कि कुछ लेख एक भाषा में तो छपे परन्तु दूसरी में नहीं।

इस अगस्त अंक के साथ हमने एक नया प्रयास किया है कि पत्रिका के आधे पन्ने सामान्य लेखों के लिए रहेंगे और ये सभी भाषाओं में एक साथ छपेंगे। यह उन लोगों के लिए काफी सुविधाजनक होगा, जो अपनी मातृ भाषा के साथ अन्य भाषा में भी पत्रिका पढ़ना चाहते हैं।

हमारे पाठक अब सभी अंकों में सम्पूर्ण, सम्पन्न और नए रूप को देख पाएँगे। और हमें उनकी प्रतिक्रियाओं को प्रतीक्षा रहेगी।

सम्पादक : *विश्वम*

आपकी चिट्ठी

मैं ३० साल का हूँ। बीस सालों के पहले मैं 'चन्दामामा' पढ़ा करता था। इधर कुछ महीनों से मैं पुनः चन्दामामा पढ़ने लगा हूँ। इससे मुझे अति आनंद प्राप्त होता है। भारत की गाथा जैसी ऐतिहासिक घटनाओं से बच्चों का चरित्र बनता है। धन्यवाद।

- आनंद, भुज.

'चन्दामामा' हमारी प्रिय पत्रिका है। सबकी प्रिय पत्रिका है। लंबे अर्से से इसे हम पढ़ते आ रहे हैं। इसे पढ़ते हुए मन उल्लास से भर जाता है। जून का अंक मुझे बेहद अच्छा लगा। कहानियाँ बड़ी ही रोचक हैं।

- गौरीशंकर, बरेली.

जून और जुलाई के अंकों में अधिकाधिक कहानियाँ हैं। यह आपने बहुत अच्छा किया। हम चाहते हैं कि कहानियों का सिलसिला इसी तरह जारी रखें। चित्र भी मनमोहक हैं। हमारा विश्वास है कि पहले की ही तरह 'चन्दामामा' लोकप्रिय व पठनीय होगा। 'यक्ष पर्वत' हमें बहुत अच्छा लग रहा है।

- सावित्री, इलाहाबाद.

जून महीने में 'विश्व पर्यावरण विशेष' शीर्षक के अंतर्गत जो समाचार आपने प्रकाशित किया, वह ज्ञानवर्धक है। ऐसे लेखों से हमारी पीढ़ी को ही नहीं बल्कि आनेवाली पीढ़ी को भी फ़ायदा पहुँचेगा।

- काशीप्रसाद, रामनगर.

जून महीने का 'चन्दामामा' मैं पढ़ चुका हूँ। स्थितप्रज्ञ, तीन टुकड़ोंवाला मंत्र तथा बुद्धि में वृद्धि आदि कहानियाँ काफी रोचक हैं। धारावाहिकों को और दिलचस्प बनाने की कोशिश कीजिए।

- अभिलाषा, अहमदनगर.

मानव प्रतिमाएँ

बहुत पहले की बात है। श्रीधर महाराज ग्रामाधिकारियों की नियुक्ति मनमाना करते थे। उनके आश्रय में जो आते थे, उन्हें जो पसंद थे, उन्ही को ग्रामाधिकारी नियुक्त करते थे। इस प्रक्रिया में पक्षपात भरा हुआ होता था। इनमें से कुछ लोग दुष्ट निकले, क्योंकि उन्हें राजा का सहारा व आश्रय प्राप्त था। ये ग्रामाधिकारी जनता को बहुत सताते थे। जनता भला कब तक इनके अत्याचारों को सहे? प्रभाकर को उन्होंने अपना प्रतिनिधि चुना और राजा के पास भेजा। वे चाहते थे कि प्रभाकर उनकी दीन और हीन स्थिति पर प्रकाश डाले और राजा को न्याय करने पर मनाये। राजा से मिलकर प्रभाकर ने ग्रामाधिकारियों के अन्यायों व अत्याचारों का खुलासा विवरण प्रस्तुत किया।

महाराज श्रीधर को प्रभाकर की ये कटु बातें अच्छी और सही नहीं लगी। श्रीधर कहने लगे, ''मुझे जो नहीं चाहते, वे जानबूझकर मुझपर कीचड उछाल रहे हैं। मुझे बदनाम करने के प्रयत्न में हैं।'' जनता के प्रतिनिधि प्रभाकर को उन्होंने डांटा भी।

''प्रभु, जनता के आराध्यदेव श्री जनार्दन स्वामी की शिला पर क़सम खाकर कहता हूँ कि जनता की इन शिकायतों में सचाई है। मेरी बातों का बिश्वास कीजिये और इन ग्रामाधिकारियों पर आवश्यक कार्रवाई कीजिए। ज़रूरत समझें तो जाँच-पडताल कीजिए'' प्रभाकर ने विनती की।

श्रीधर इसपर हँस पड़े और बोले, ''प्रतिमा के रूप में तराशे जाने मात्र से पत्थर में प्रतिमा के गुण

त्यागी

नहीं समाते। प्रतिमाएँ अनपढ़ व अज्ञानियों के लिए हैं। मुझे अच्छाई और सचाई में विश्वास है। ये ही मेरे दैव हैं।

मैं भली-भाँति जानता हूँ कि जिन ग्रामाधिकारी की तुम नुक़ताचीनी कर रहे हो, जिनपर तुम दोष मढ़ रहे हो, वे बुरे नहीं हैं बल्कि बहुत ही अच्छे व्यक्ति हैं। उनके बारे में जो-जो बातें तुमने कहीं, वे बिल्कुल ही झूठी हैं। अब तुम्हें माफ़ कर रहा हूँ। फिर से कभी तुमने ऐसी जुर्रत की और लोगों की शिकायतें लेकर मेरे पास आये तो मैं तुम्हें जेल में ठूँस दूँगा और कड़ी सी कड़ी सज़ा दूँगा।''

''प्रभु, आपने मुझे क्षमा किया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। फिर भी इन ग्रामाधिकारियों के बारे में आपके सम्मुख शिकायतें पेश कर रहा हूँ। आपको ठीक लगे तो मुझे जेल भेजिये। जो सज़ा आप देना चाहते हैं, दीजिए।'' प्रभाकर ने निर्भीकता से कहा।

यह सुनकर श्रीधर हक्का-बक्का रह गये। वे प्रभाकर पर बहुत नाराज़ भी हुए। परंतु उसके आग्रह व कार्यदक्षता की दाद दिये बिना रह नहीं रह सके। उन्होंने प्रभाकर को बिना कोई वचन दिये वहाँ से भेज दिया और फिर मंत्रियों से सलाह-मशविरा किया।

उस राज्य में महावेद नामक एक सर्वोत्तम व्यक्ति थे। वे गाँव-गाँव में जाते और लोगों को हित-बोध करते रहते थे। उन्हें जीवन में नैतिक मूल्यों के बारे में समझाया करते थे। लोग कहते रहते थे कि उनकी वजह से कितने ही दुष्ट और पापी सज्जन बन गये और सन्मार्ग को अपनाया। बहुत-से लोगों का यह विश्वास भी है कि सदा सच बोलनेवाले वे दैवांश हैं।

मंत्रियों ने राजा को सलाह दी कि ग्रामाधिकारियों के बारे में सचाई जानने हेतु महावेद नियुक्त किये जाएँ। उन्हें यह काम सौंपा जाए। श्रीधर ने महावेद को सादर अपने कक्ष में बुलाया और समस्या का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा, ''मेरे विरोधी मुझपर आरोप लगा रहे हैं कि मैंने ग्रामाधिकारियों की नियुक्ति में पक्षपात दिखाया। उनका कहना है कि मैंने इन पदों पर उन्हीं ही को नियुक्त किया, जिन्हें मैं चाहता हूँ। वे इस बाबत तरह-तरह की अफ़वाहें फैला रहे हैं। मैं किसी और का विश्वास नहीं करता, इसलिए आप जैसे सत्पुरुष को यह जिम्मेदारी सौंपना चाहता हूँ। आप ही को इसका न्याय-निर्णय करना होगा।''

महावेद ने राजा की बातें ग़ौर से सुनीं और गंभीरतापूर्वक कहा, ''अपने चाहनेवालों की प्रशंसा सुनो तो उनपर संदेह करो। उनके बारे में दुष्प्रचार हो तो उसका विश्वास करो। राजा होने के नाते यह तुम्हारा कर्तव्य है। प्रभाकर ने जो भी कहा, सच है। इन गाँवों में जाकर मैंने सचाई बहुत पहले ही जान ली। उन्हें बदलने की कोशिशों में मैं विफल भी हुआ। तुम्हारा सहारा पाकर ही, तुम्हारे ही बल पर, तुम्हारी ही आड़ में वे मनमानी कर रहे हैं। तुम्हें उनपर कड़ी कार्रवाई करनी होगी, तभी उनमें सुधार की संभावना है।''

श्रीधर को महादेव की ये बातें भी अच्छी नहीं लगीं। इसलिए फिर से उन्होंने कहा, ''महात्मा, मानता हूँ कि हर मनुष्य में भगवान है। परंतु मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता कि ऐसे मनुष्यों में दुष्ट भी होते हैं। अगर मेरी इस विचारधारा में त्रुटि हो तो कृपया बतायें, क्योंकि आप सर्वज्ञ हैं।''

''राजन् इस सृष्टि की एक विशेषता है, जिसे शायद तुम नहीं जानते। उससे संबंधित एक कहानी सुनोगे तो तुम्हारे सारे के सारे संदेह आप ही आप दूर हो जाएँगे'' फिर महावेद ने श्रीधर को वह कहानी सुनायी।

''ब्रह्मा ने पृथ्वी पर समस्त जीवों की सृष्टि की। उन्होंने मनुष्य मात्र को दीवांश प्रदान किया और साथ ही उसे बुद्धि-बल भी दिया। इस विशिष्टता को लिए मनुष्य महात्मा बनकर जीने लगा तो बुद्धिहीन अन्य सभी जीव उसे सताने लगे।

सहनशक्ति और शांति मनुष्य में मूर्तिमान हैं परंतु लगने लगा कि ऐसे सद्गुणों की खान मनुष्य-जाति सदा के लिए समाप्त हो जायेगी। इसलिए ब्रह्मा ने इस वैपरीत्य पर खूब सोचा-विचारा और एक उपाय निकाला। उन्होंने हर जंतु, पक्षी व कीड़े में एक मनुष्य को उसी रूप में जन्म दिया। उस मनुष्य के कारण उन जीवों में मनुष्य के प्रति सद्भावना व सहृदयता ही पैदा नहीं हुई बल्कि सद्व्यवहार की भावना भी उनमें जगी। उन्होंने इसकी आदत भी डाल ली। क्रमशः हर जीव मानव के अनुकूल व्यवहार करने लगा। वे मानव-जन्म की महानता के बारे में जान गये।

ऐसी स्थिति में शेष सभी जीव ब्रह्मा के पास गये और विनती की ''इस सृष्टि के हर जीव में कोई न कोई महानता है। चूँकि मनुष्य सभी जीवों में मौजूद है, अतः उन जीवों को मनुष्य की महानता

का पता चला। वे सुधर गये। उन्होंने मनुष्य से आत्मीय भावना स्थापित की। इसलिए हम चाहते हैं कि इसी प्रकार हर जीव में से एक प्राणी को मनुष्य का जन्म दिया जाए तो मनुष्य भी इन जीवों की महानता समझ पायेगा। उनके प्रति आत्मीयता के साथ व्यवहार करने लगेगा।''

ब्रह्मा ने 'तथास्तु' कहा।

महावेद ने, श्रीधर को यह कहानी सुनाकर कहा, ''राजन्, जिन मनुष्यों में पक्षी के अंश होते हैं, वे पक्षियों से प्यार करते हैं, उन्हें चाहते हैं। साधु जंतुओं के अंशवाले उन्हीं के लक्षणों के होते हैं। क्रूर मृग व विष सर्पों के अंशवाले उन-उन अंशों की सीमाओं तक अन्याय अत्याचार करते रहते हैं। यह अंश हद से ज्यादा हो जाए तो वे और अत्याचार करने लगते हैं। बड़े, दुष्ट बन जाते हैं।

मनुष्य की दुष्टता का कारण उन-उन दुष्ट जीवों के अंश ही हैं। दुष्ट जीवों का जिस प्रकार हम शिकार करते हैं, उसी प्रकार दुष्ट मनुष्यों का भी शिकार करना चाहिए, अन्यथा ये राजा का सहयोग मिलने से प्रलयकारी बन जाते हैं। इनका अंत करना ही राजा का कर्तव्य है।''

महाराज श्रीधर ने फ़ौरन महावेद को साष्टांग नमस्कार किया और कहा, ''महात्मा! आपने मेरा अज्ञान दूर कर दिया। महात्माओं के हितबोधों और संदेशों के बाद भी जो दुष्ट मानव नहीं बन पाते, जिनमें परिवर्तन नहीं आता, वे जीने के लायक नहीं हैं। इन क्रूर जंतुओं को मनुष्यों के बीच में रहने का कोई अधिकार नहीं। इन जंतुओं को पिंजडों में बंद रखना, राजा होने के नाते मेरा प्रथम कर्तव्य है।''

इसके बाद श्रीधर ने अन्यायी व अत्याचारी ग्रामाधिकारियों पर आवश्यक कार्रवाई की। उत्तम मनुष्यों का आदर-सत्कार किया और अपराधियों को कड़ी से कड़ी सज़ा दी।

यक्ष पर्वत

8

(गुरु भल्लूक सुरंग मार्ग के ऊपर के द्वार पर आया। खड्ग जीवदत्त ने मरे भेड़ियों को द्वार के अंदर फेंक दिया। कुछ भेड़िये यह देखते ही सुरंग के अंदर घुसे। उन्हीं के पीछे-पीछे खड्ग जीवदत्त भी द्वार पर चढ़ गये। समरबाहु और उसका अनुयायी नीचे खड़े थे। भेड़िये उन्हें घेरने लगे) इसके आगे...

समरबाहु सोच में पड़ गया कि अपनी रक्षा कैसे कर ली जाए। वह अपने चारों ओर देखने लगा। वह नहीं चाहता था कि बिल मार्ग से गुज़रूँ और अपनी रक्षा कर लूँ। तब चंद्र ने ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा, ''सरदार, भेड़िये हम पर आक्रमण करने ही वाले हैं। लगता है, हमारी मौत निश्चित है।''

इतने में खड्गवर्मा ने द्वार के पीछे से झुककर अपने हाथ नीचे फैलाये और कहा, ''समरबाहु, चंदू, मेरे हाथ पकड़ लो और द्वार के ऊपर आ जाओ''।

और कोई चारा न पाकर समरबाहु और चंदू ने खड्गवर्मा के हाथ पकड़ लिये। खड्गवर्मा ने तुरंत उन दोनों को ऊपर खींचा। उधर जीवदत्त अपने मंत्र दंड से भेडियों को धमका रहा था और मौक़ा पाकर उड़ता हुआ सुरंग मार्ग पर आ गया।

अब चारों ने बड़ी ही तीक्षण दृष्टि से सुरंग के अंदर देखा, जहाँ वे थे। खड्गवर्मा ने जीवदत्त से कहा, ''जीव, गुरु भल्लूक और उसके गिरोह का कोई पता चल नहीं रहा है। ये भला कहाँ चले गये होंगे?''

जीवदत्त ने कान लगाकर सुना कि क्या बिल से किसी प्रकार की आवाज़े निकल रही हैं? फिर उसने कहा, ''खड्ग, बिल के अंदर शोरगुल सुनायी

करूँगा? जब तक मेरा लक्ष्य पूरा नहीं होता, मैं मरना नहीं चाहता।''

समरबाहु की बातों पर दोनों हंस पड़े। फिर जीवदत्त ने सुरंग मार्ग में आगे बढ़ते हुए कहा, ''समरबाहु, मेरा यह मंत्रदंड, खड़गवर्मा की तलवार तुम्हें हमारे मित्र स्वर्णाचारी के पास सकुशल पहुँचायेंगे। हमारा यह आश्वासन पाकर हाथ पर हाथ धरे मत बैठना। ज़रूरत पड़ने पर अपनी बर्छी को उपयोग में लाना।''

जैसे-जैसे वे सुरंग मार्ग में आगे बढ़ते जा रहे थे, वैसे-वैसे भेड़ियों की चिल्लाहटें, आदमियों की आवाज़ें स्पष्ट सुनायी देने लगीं। थोड़ी ही देर में वे सुरंग मार्ग से होते हुए रीछवाले आदमियों के निवास स्थल पर पहुँचे। जीवदत्त को वहाँ पहुँचने पर लगा कि गुरु भल्लूक शायद वृकेश्वरी देवी के मंदिर में होगा।

इतने में एक रीछवाला चिल्लाता हुआ, भय से काँपता हुआ उन्हीं की तरफ़ दौड़ा आ रहा था। एक भेड़िया मुँह फैलाए उसका पीछा कर रहा था। खड़गवर्मा तुरंत एक क़दम आगे बढ़ा और अपनी तलवार भेड़िये के बदन में भोंक दी। भेड़िया आर्तनाद करता हुआ गिरता-उठता हुआ वहाँ से भाग गया।

तब जीवदत्त ने उस रीछवाले से धीमें स्वर में पूछा, ''अरे गुरु भल्लूक के शिष्य, तुम ज़ोर-ज़ोर से बोलना मत। मैं जो पूछता हूँ, बस, उसका जवाब देना। तुम्हारा सरदार गुरु भल्लूक अब कहाँ है? तुम्हारे गिरोह के सभी लोग क्या अब भी बिल दुर्ग

दे रहा है। किन्तु स्पष्ट नहीं हो रहा है कि वहाँ क्या हो रहा है। क्या तुम्हें कुछ भी सुनायी नहीं पड़ता?''

खड़गवर्मा उत्तर दे, इसके पहले ही समरबाहु कहने लगा, ''मुझे भेड़ियों की चिल्लाहटें ही नहीं, बल्कि गुरु भल्लूक की चिल्लाहट भी साफ़ सुनायी पड़ रही है। वह अपने शिष्यों को सावधान कर रहा है। यहाँ हमारा और रहना अच्छा नहीं होगा,'' कहता हुआ वह भय से काँपने लगा। उसकी बातों पर हँसते हुए खड़गवर्मा ने कहा, ''तुम भी कैसे सरदार हो। साम्राज्य स्थापित करने के लिए रेगिस्तान से इतनी दूर चले आये हो और जान से इतनी मोहब्बत। तुम्हें यह शोभा नहीं देता।''

यह ताना सुनते ही समरबाहु ने अपने को संभाल लिया और अपनी बर्छी को ऊपर उठाते हुए कहा, ''मर जाऊँगा तो कैसे साम्राज्य स्थापित

में ही हैं? कहीं वे जंगल की ओर भाग तो नहीं गये?''

''साहबों, भेड़ियों के हमले से डरकर हमारे सब लोग झोंपड़ियों में, कमरों में छिप गये। गुरु भल्लूक बृकेश्वरी देवी के मंदिर में पूजा कर रहे हैं।''

''आदमियों को पकड़ लेते हो, उन्हें अपना गुलाम बनाते हो और उनसे बेगारी कराते हो। अपने को बहादुर कहने से शर्माते भी नहीं हो। फिर भेड़ियों से इतना भय क्यों?'' खड्गवर्मा ने पूछा।

''सरकार, आदमी तो अपने से अधिक बलवानों के सामने झुक जाते हैं। पर भेड़िये क्रूर मृग हैं इनका भला कैसे कोई सामना करे? ये तो बलवानों को भी खा जाते हैं'' रीछवाले ने कहा।

जीवदत्त ने उसकी बात पर हँसते हुए कहा, ''कायर हो, पर सही बात कही। तुमने कहा था, गुरु भल्लूक बृकेश्वरी के मंदिर में है। तुम आगे-आगे जाओ और हमें रास्ता दिखाओ। हमें धोखा देने की कोशिश की तो चर्बी उधेड़ दूँगा।''

भल्लूक के शिष्य ने थोड़ी दूर जाने के बाद एक कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा, ''साहब, वही बृकेश्वरी देवी का मंदिर है। गुरु भल्लूक अंदर ही हैं।''

खड्गवर्मा चुपके से मंदिर के दरवाज़े के पास गया, धीरे से दरवाजे को धक्का दिया। उसने देखा कि गुरु भल्लूक बृकेश्वरी देवी की मूर्ति से चार-पाँच फुट की दूरी पर ज़मीन पर लेटकर साष्टांग प्रणाम कर रहा है और अपने ही आप बड़बड़ा रहा है।

खड्गदल ने जीवदत्त से पूछा, ''कहो, अब क्या किया जाए?'' जीवदत्त ने कहा, ''वह मूर्ति के

सामने साष्टांग लेटा हुआ है। तुम चुपके से मूर्ति के पीछे चले जाना। उसे ऐसा उपदेश देना, मानों स्वयं देवी ही उससे कह रही हों। देवी की वाणी में उससे कहना कि वह अपने शिष्यों सहित बिल दुर्ग से भाग जाए। यह भी कहना कि ऐसा न होने पर बड़ा अनर्थ होगा।''

फूंक-फूंककर क़दम बढ़ाते हुए खड्गवर्मा वृकेश्वरी देवी की मूर्ति के पीछे छिप गया और कहने लगा, ''भक्त गुरु भल्लूक, तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ। देव द्रोहियों के प्रवेश से यह बिल दुर्ग अपवित्र हो गया। मैं अभी यहीं अदृश्य हो रही हूँ और अरण्य के सरोवर के किनारे पर के शमी वृक्ष के नीचे प्रत्यक्ष होने जा रही हूँ। अपने शिष्यों सहित वहाँ पहुँच जाओ और मेरी पूजा करो।''

देवी की यह वाणी सुनते ही वह घबराकर उठ खड़ा हो गया। उसने हाथ जोड़कर कहा, ''वृकेश्वरी माँ ने कुछ और कहने ही जा रहा था तो देवी की वाणी में खड्गवर्मा ने उसे डाँटते हुए कहा, ''कुछ और न बोल तुरंत अरण्य के सरोवर के किनारे पहुँच जाना।''

गुरु भल्लूक मंदिर से निकलकर बाहर आये, इसके पहले ही जीवदत्त और बाक़ी एक दीवार के पीछे छिप गये। गुरु भल्लूक पंचशूल को ऊपर उठाते हुए चिल्लाने लगा, ''ओ वृकेश्वरी माँ के भक्तों, देवी ने आज्ञा दे दी। अभी निकलो और अरण्य के सरोवर के किनारे पहुँच जाना।'' यों चिल्लाता हुआ वह बिलदुर्ग में घूमने-फिरने लगा। सभी लोग बिलदुर्ग से बाहर आ गये। थोड़ी दूर जाने के बाद उसे संदेह हुआ कि वृकेश्वरी अब भी मंदिर में ही हैं या अदृश्य हो गयीं। वह लौटकर बिलदुर्ग की तरफ़ आने लगा। तब खड्ग जीवदत्त भेड़ियों को डरा-धमकाकर बाहर खदेड़ रहे थे।

सामने से आते हुए भेड़ियों को देखकर भल्लूक भय से काँप उठा और अपने शिष्यों की ओर दौड़ते हुए चिल्लाने लगा, ''वृकेश्वरी माते, हमारी रक्षा कर।''

इस दृश्य को देखते हुए चकित खड्गवर्मा ने कहा, ''चार-पाँच भेड़िये ही उनका पीछा कर रहे हैं। उन्हें मार डालने का साहस भी वे नहीं कर सके। इन वृकेश्वरी के भक्तों की दयनीय स्थिति को देखते हुए दया आती है और हँसी भी।''

जीवदत्त तेज़ी से आगे बढ़ा और मंत्रदंड से एक भेड़ियों को कड़ी चोट पहुँचायी। चोट खाकर भेड़िया नीचे गिर गया और छटपटाने लगा। बाकी भेड़िये तितर-बितर होकर भाग गये। गुरु भल्लूक

ने जब यह देखा उसके आनंद की सीमा न रही। उसने दोनों हाथ जोड़कर जीवदत्त को प्रणाम किया।

जीवदत्त ने भल्लूक को नख से शिख तक ध्यान से देखा और कहा, ''भल्लूक बाबू, तुम्हें खेती करके आराम से ज़िन्दगी काटनी थी, पर तुमने क्यों इन भेड़ियों को पाला-पोसा और क्यों वृकेश्वरी की उपासना कर रहे हो?''

भल्लूक ने बड़े ही विनम्र स्वर में कहा, ''साहब, सबों पर अपना अधिकार चलाता रहूँ, आराम से ज़िन्दगी काटूँ, यही मेरा उद्देश्य था। और इससे बढ़कर कोई आसान रास्ता मुझे नहीं सूझा।''

''अब आगे क्या करने का तुम्हारा इरादा है? तुम्हारे सभी शिष्य तुम्हें भेड़ियों के हवाले करके अरण्य में जो चले गये।'' खड्गवर्मा ने पूछा।

''ऐसी कोई बात नहीं है साहब। वे सबके सब अरण्य के सरोवर के किनारे वृकेश्वरी की पूजा करने गये हैं। महाशक्तिशालिनी वह देवी बिल दुर्ग से चली गयी हैं न?'' गुरु भल्लूक ने कहा।

इतने में चार रीछवाले दौड़ते हुए वहाँ आये और कहने लगे, ''गुरु भल्लूक, उस सरोवर के पास पाँच-छः ऊँटवाले हैं। स्वर्णाचारी नामक उनके सरदार ने हममें से दो आदमियों को मार डाला और हमारे पाँच लोगों को घेर लिया। यह बुरी ख़बर सुनाने के लिए हम यहाँ दौड़े आये।''

स्वर्णाचारी का नाम सुनते ही खड्गवर्मा जीवदत्त और समरबाहु आश्चर्य में डूब गये। पर्वत पर क़िले के निर्माण के प्रयत्नों में लगा हुआ

स्वर्णाचारी अपने चार-पाँच अनुयायियों को लेकर अचानक यहाँ क्यों आ धमका, उनकी समझ में नहीं आया।

बात यों थी यह पर्वत और अरण्य वीरपुर के राजा वीरसिंह के अधीन हैं। एक सप्ताह के पहले वीरसिंह के चिड़िया-घर का एक अधिकारी नये मृगों को पकड़ने के उद्देश्य से जंगल आया था। उसने साथ दस सैनिक भी थे। उन्होंने जाल बिछाये और कुछ जंगली पक्षियों व दो बाघों को पकड़ भी लिया। दुपहर को एक झरने के किनारे बैठकर वे आराम से खाना खाने लगे।

राजा के एक सैनिक ने सबसे पहले खाना खा लिया। वह देखने लगा कि क्या दुपहर की इस बेला में पेड़ों पर कोई विचित्र पक्षी हैं? वह पेड़ों की छाँव में से गुज़रता हुआ जंगल में थोड़ी दूर और

गया। उसने देखा कि झरने के किनारे चार ऊँट पेड़ से बंधे हुए हैं। यह दृश्य देखकर वह चकित रह गया और लौटकर उसने यह समाचार अधिकारी को सुनाया।

"ऊँट ! कहाँ हैं? हमारे चिड़िया-घर में ऊँट है ही नहीं। ये भी हों तो राजा का यश अधिक बढ़ जायेगा। हमारे राज्य का बड़ा नाम होगा" कहता हुआ अधिकारी उत्साह-भरित होकर खिलखिलाकर हँसने लगा।

परंतु सैनिक ने उसके उत्साह पर पानी फेरते हुए कहा, "सरकार, वे ऊँट पेड़ से बंधे हुए हैं। लगता है, वहीं कहीं उनके मालिक भी हैं।"

"मालिक ! वे कौन होते हैं? इस वीरपुर राज्य की समस्त जनता, जंगल, पहाड़, पानी, हवा, इस राज्य पर विस्तरित पूरे आकाश के मालिक हमारे वीरसिंह महाराज हैं। तुममें से चार जाओ और उन ऊँटों को पकड़कर यहाँ ले आओ। जिन मालिकों की बात तुम कर रहे थे, वे भी मिल जाएँ तो उन्हें भी पकड़कर यहाँ, मेरे सामने ले आना।"

चार सैनिक उस जगह पर गये, जहाँ ऊँट बंधे हुए थे। उनके मालिक का कहीं पता नहीं चला। रस्सियों से बंधे ऊँटों को वे छुड़ाने लगे तो उनमें से एक ऊँट घबरा गया और बड़े ही विकृत रूप से चिल्लाने लगा। वे अपने पैरों से पेड़ों के तनों को लात मारने लगे और गड़बड़ी करने लगे।

स्वर्णाचारी अपने चार अनुयायियों को लेकर जंगल में शिकार करने आया था। शिकार कर चुकने के बाद वे घनी झाड़ियों के तले आराम कर रहे थे। उन्होंने ऊँट का चिल्लाना सुना। उन्होंने सोचा कि किसी बाघ या शेर ने ऊँटों पर हमला कर दिया होगा। तलवारें निकालकर वे दौड़े-दौड़े उस जगह पर आये।

उन्हें देखकर सैनिकों ने म्यानों से तलवारें निकालीं। समरबाहु के अनुचरों में से एक ने नाराज़ी से दांत पीसते हुए कहा, "कौन हो तुम लोग? सैनिकों की पोशाक पहने जंगली चोर लगते हो। ऊँटों की चोरी करना तुम जैसों के लिए नामुमकिन है।"

"हम चोर नहीं हैं। वीरसिंह महाराज के सैनिक हैं। तुम्हारे ऊँटों की चोरी करने नहीं आये। कर चुकाये बिना राजा के अरण्य में प्रवेश करने और चरने के अपराध में इन्हें पकड़कर ले जा रहे हैं।" एक सैनिक ने निर्भय होकर कहा।

"कौन है वह वीरसिंह महाराज? इस प्रवेश पर पूरा अधिकार रखते हैं श्री श्री समरबाहु महाराज। उनके ऊँटों को चुराने आये तुम लोगों को कड़ी से कड़ी सज़ा देंगे। तुरंत तलवारें म्यानों में रख दो और हमारे अधीन हो जाओ।" स्वर्णाचारी ने गरजते हुए कहा।

भागना असंभव लगा तो वीरसिंह के सैनिकों ने उनका सामना किया। खड्ग-युद्ध में वीरसिंह के दो सैनिक मारे गये। एक घायल हो गया। चौथा सैनिक किसी तरह से वहाँ से भाग निकला और चिड़िया-घर के अधिकारी के पास पहुँच पाया।

रक्त से लथपथ हाँफते हुए आये सैनिक को देखकर अधिकारी ने कहा, "यह तो बड़ा ही विचित्र लगता है। मैंने अरण्य के जिन पालतू जंतुओं के शास्त्रों में पढ़ा, उसमें कहीं भी ऊँट को मांसाहारी बताया नहीं गया। तुम्हारे साथ आये शेष तीनों को उन ऊँटों ने मारकर क्या खा लिया?"

"सरकार, ऊँटों से नहीं, उनके मालिकों के हाथों मैं घायल हुआ हूँ। मेरे साथ आये तीनों को उन्होंने मार डाला। मालूम नहीं, वे लोग कौन है? पर तलवार चलाने में बड़े ही कुशल लगते हैं।" सैनिक ने कहा।

"हममें से भी हर कोई तलवार चलाने में सिद्धहस्त हैं। अन्य राज्यों के लोग इस सत्य से अपरिचित लगते हैं। मुझे विश्वास नहीं होता कि हमसे बढ़कर तलवार के धनी हो सकते हैं" कहते हुए अधिकारी ने अपनी म्यान से फ़ौरन तलवार निकाली। उसके साथ-साथ बाकी सैनिकों ने भी तलवारें निकालीं।

घायल सैनिक उसी दिशा की ओर एकटक देखने लगा, जहाँ से वह भाग आया था। उसी की तरफ़ बढ़े आ रहे समरबाहु के अनुचरों को देखकर उसने चिड़िया-घर के अधिकारी से कहा, "आपके संदेह की निवृत्ति जल्दी ही हो जायेगी। देखिये, वे लोग यहीं चले आ रहे हैं।"

"ऐ वीरशूर सैनिकों, ये लोग कितने मासूम हैं। यमकिंकरों को भी भगाने की शक्ति रखनेवाले हमसे ये जूझना चाहते हैं? हमीं पर आक्रमण करने जा रहे हैं?" कहते हुए अधिकारी ने सैनिकों को सावधान किया और समरबाहु के अनुयायियों की ओर बढ़ा। (क्रमशः)

संकोची दामाद

राम और रजनी ने अपनी इकलौती पुत्री का विवाह भी कर दिया और ससुराल भी भेज दिया। अब उस चिंता से मुक्त होकर आराम से सांस लेना ही उनका एकमात्र काम था।

गर्मी के दिन थे। कड़ी धूप में आये दामाद को देखकर वे चकित रह गये। दामाद ने आते ही उनसे कहा, "मेरे आने का कोई खास कारण नहीं है। इस गाँव में एक छोटा-सा काम था, इसलिए चला आया। जाते-जाते आपको देखने की इच्छा हुई।" राम और रजनी तब तक खाना खा चुके थे। रजनी ने बरतन भी साफ करके रसोई-घर में रख दिये। दोनों सोने के प्रयत्न में लगे ही थे कि अचानक दामाद आ गया।

दामाद हाथ-मुँह धो ले, इस बीच में रजनी ने दामाद के लिए नाश्ता बनाने का निश्चय किया। और इसी काम पर वह रसोई-घर में गयी। उसने यथाशीघ्र नाश्ता भी तैयार कर लिया और उसे थाली में परोसकर दामाद के सामने रख दिया। शायद बहुत ही स्वादिष्ट था। उसने सोचा कि सास और नाश्ता लायेगी और परोसेगी। परंतु वह भांप गया कि सास कोई ऐसी कोशिश नहीं कर रही है। खुलकर माँगने से वह सकुचा रहा था। उसने खाली थाली को पीछे पलटकर देखा और कहने लगा, "थाली सुंदर है। किस दुकान में खरीदी? क्या दुकान का नाम पीछे है?" कहते हुए वह थाली को बार-बार उलट-पुलटकर देखने लगा।

सास रजनी जान गयी कि दामाद को नाश्ते की ज़रूरत है। पर उसने जितना भी नाश्ता बनाया था, पूरा थाली में परोस दिया था। वह भी यह कहने में सकुचा रही थी कि नाश्ता खतम हो गया।

दोनों की इस हालत को देखकर राम से चुप नहीं रहा गया और उसने दामाद से कहा, "दामादजी, ठहर जाइये। इस थाली के साथ और एक बरतन भी रसोई-घर में है। देखता हूँ कि क्या उसके पीछे कहीं उस दुकान का नाम लिखा हुआ है?" कहता हुआ वह रसोई-घर में गया और उस बरतन को ले आया, जिसमें उसकी पत्नी ने नाश्ता बनाया था। दामाद के सामने उसे पलटाकर रखते हुए कहा, "यह वही बरतन है, जिसमें तुम्हारी सास ने नाश्ता बनाया था। इसके पीछे भी दुकान का नाम नहीं है।" दामाद को यह जानने में देरी नहीं लगी कि ससुरजी क्या कहना चाहते हैं। वे यही कहना चाहते हैं कि नाश्ता पूरा का पूरा खतम हो गया। वह कर भी क्या सकता था। उसने उठकर हाथ धो लिये। असमय पर आकर उन्हें कष्ट पहुँचने के लिए मन ही मन पछताते हुए वह विदा लेकर चलता बना।

- सुचित्रा

पंडित की पहचान

धुन का पक्का विक्रमार्क पुन: उस प्राचीन वृक्ष के पास गया। वृक्ष पर से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। मौन श्मशान की तरफ़ अग्रसर होने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा ''राजन्, तुम्हारे मनोधैर्य की दाद देता हूँ। कष्ट सहे जा रहे हो, बार-बार मैं तुम्हें सताये जा रहा हूँ, तुम्हारे मौन-भंग में सफल हो रहा हूँ, फिर भी तुम पीछे हटने का नाम ही नहीं ले रहे हो। न ही तुम्हें इस घोर अंधकार की परवाह है न ही इस भयानक श्मशान की! मैं इतने लंबे अर्से के बाद भी जान नहीं पाया हूँ कि तुम्हारा लक्ष्य क्या है, किसकी सहायता करने के उद्देश्य से इतनी तकलीफ़ों से गुज़र रहे हो? क्योंकर ये

मुसीबतें झेल रहे हो? कभी-कभी तो तुम्हारी दयनीय स्थिति को देखकर मेरा दिल पसीज उठता है। मेरी समझ में नहीं आता कि इन सबके पीछे कौन-सा ऐसा कारण है, जिसके लिए तुम इतने त्याग करने पर तुल गये? कहीं तुम अपने गुरू या पंडित के लिए इतना श्रम तो नहीं कर रहे हो? तब तो मुझे निश्चित रूप से कहना ही पड़ेगा कि तुम्हारा लक्ष्य पूरा नहीं होगा। तुम्हें निराश होना ही पड़ेगा। ये गुरू और तथाकथित पंडितगण स्थिर चित्त के नहीं होते। इनमें व्यवहार दक्षता नाम मात्र के लिए भी नहीं होती। इनमें स्वार्थ और अहंकार कूटकूटकर भरा हुआ होता है। इनके चाहनेवालों में भी कोई बराबरी की योग्यता रखते हो, प्रतिभा होती हो तो उनसे ये ईर्ष्या करने लगते हैं। उनके प्रति शत्रु-भाव रखते हैं। उनको नीचा दिखाने की कोशिशों में लगे रहते हैं। इनकी यह हीन प्रवृत्ति उन्हें पनपने नहीं देती। उदाहरणार्थ में तुम्हें जगन्नाथ पंडित की कहानी सुनाऊँगा। अपनी थकावट दूर करते हुए ध्यानपूर्वक सुनो !''
फिर बेताल पंडित जगन्नाथ की कहानी सुनाने लगा।

बहुत पहले की बात है। गोस्तनी नदी तट पर हरितवन नामक एक गाँव था। गाँव में और गाँव के इर्द-गिर्द जहाँ देखो, वहाँ हरियाली ही हरियाली थी। वहाँ फसलें अच्छी होती थी। फल-फूल तथा वृक्षों से गाँव भरा हुआ था। वहाँ के निवासियों के लिए गोस्तनी नदी दैव समान थी। फसल के हाथ में आ जाने के बाद वहाँ के मजदूरों से लेकर मालिकों तक गोस्तनी तट पर उत्सव मनाते थे।

ऐसे हरितवन नामक गाँव में जगन्नाथ नामक एक बहुत बड़ा पंडित रहता था।आसपास के गाँवों में इतना बड़ा पंडित कोई और नहीं था। वह केवल पंडित ही नहीं था बल्कि एक अच्छा कवि भी था। पर उसका पांडित्य व कविता केवल वहाँ के ज़मीदारों व बहुत ही कम संख्या में पाये जानेवाले शिक्षितों तक ही सीमीत थे। अशिक्षितों को इससे कोई लाभ पहुँचता नहीं था। न ही वे उसके पांडित्य से लाभ उठा पाते थे, न ही उसकी कविता से आनंद लूट पाते थे। जगन्नाथ की दृष्टि में वे निरर्थक प्राणी थे। उसके दृश्य में उनके लिए कोई आदर-भाव नहीं था।

श्रीधर उसका इकलौता बेटा था। उसका स्वभाव बिल्कुल ही उसके पिता के स्वभाव के विरुद्ध था। दोनों की प्रवृत्तियाँ एकदम भिन्न-भिन्न थीं। श्रीधर प्रकृति के सौंदर्य का आराधक था। सबेरे और शाम को वह खेतों में विचरता

रहता था। बाग-बगीचों में टहलता रहता था। वह मन को लुभानेवाली कविता सुनाया करता था। कविता का भावा भी बिल्कुल ही सरल होता था। उसकी कविता सुनने और उसका रसास्वादन करने खेतों में काम पर लगे मजदूर भी इकट्ठे हो जाते थे। अगर कविता का भाव समझने में वे जटिलता महसूस काते थे तो श्रीधर उन्हें समझाता था, उनके संदेहों को दूर करता था।

श्रीधर की यह व्यवहार शैली उसके पिता जगन्नाथ को बिल्कुल पसंद नहीं आती थी। वह उससे कहा करता था "कविता में रस पुष्टि जितनी आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक है, रसिक श्रोता की रुचि। इन अशिक्षित, अनपढ़े लोगों को कविता सुनाना व्यर्थ है, ऐसा करना साक्षात सरस्वती का अपमान करना है। उसपर कीचड़ उछालना है। तुम्हारा यह पांडित्य मुझे कतई पसंद नहीं। अच्छाई इसी में है कि तुम अपनी पद्धति बदल लो। नहीं तो तुम कहीं के न रहोगे। यों उसने अपने बेटे से बहुत बार कहा, समझाया, धमकाया।

यों दिन गुज़रते गये। हरितबन से दस कोस की दूरी पर के एक गाँव से श्रीधर के विवाह का एक प्रस्ताव आया। दुलहिन का नाम था शारदा। वह नारायणभट्ट नामक एक पंडित की इकलौती बेटी थी। स्वंय गुरू बनकर उसने अपनी पुत्री को पढ़ाया-लिखाया।

जगन्नाथ पंडित अपने बेटे को लेकर दुलहिन को देखने माघबीपुर पहुँचा। ससुर से पूछे गये चार-पाँच प्रश्नों का उत्तर समुचित ढंग से दिया शारदा ने। यों वह ससुर की परिक्षा में उत्तीर्ण हो गयी। श्रीधर को भी उसका स्वभाव बहुत ही

अच्छा लगा। उसे विश्वास हो गया कि वह हर तरह से योग्य पत्नी बनेगी। तिसपर उसकी सुंदरता ने भी उसे मोह लिया। अब शादी पक्की हो गयी।

एक महीने के अंदर ही श्रीधर और शारदा का बिवाह संपन्न हुआ। नयी वधु को देखने आये सभी ने उसकी विनयशीलता व सुंदरता की वाहवाही की। श्रीधर के भाग्य को उन सबने बार-बार सराहा।

यों दिन गुजरते गये। एक दिन शाम को जब जगन्नाथ घर से बाहर आया तब पशुशाला से उसे बहू का कोमल स्वर सुनायी पड़ा। उसने उस तरफ़ अपनी नज़र दौड़ायी।

उस समय पशुशाला में नौकर रतन गाय का दूध दुह रहा था। गाय से थोड़ी दूर पर खड़ी शारदा बड़े ही रसीले स्वर में एक श्लोक पढ़ रही थी। रतन

आनंद मग्न होकर दूध दुहता जा रहा था और गीत सुनता जा रहा था।

श्लोक पठन जैसे ही समाप्त हुआ, शारदा उसका भावार्थ समझाने लग गयी।

"रतन, गोकुल में नन्हें नटखट कृष्ण की माँ यशोदा भी इसी तरह एक दिन दूध दुह रही थीं। तब नन्हा कृष्ण माँ के पास आया। पीछे से उसने माँ की पीठ से लगाकर अपने दोनों हाथों को उसके गले में डाल दिया और कहने लगा "माँ, दूध नहीं पिलाओगी?" तब यशोदा पुचकारती हुई कहने लगी "अभी नहीं कन्हैय्या, अंधेरा छा जाने के बाद दूध पीना।"

"यह अंधेरा क्या होता है माँ?" नन्हें कृष्ण ने प्रश्न किया। यशोदा ने कहा "अंधेरा छा जाने पर हमें कुछ दिखायी नहीं पड़ता"। रतन, जानते हो, उस नन्हें कृष्ण ने क्या किया? अपनी दोनों आँखे ज़ोर से बंद कर लीं और कहने लगा "अंधेरा तो छा गया। मुझे कुछ भी दिखायी नहीं देता। अब दूध पिलाओ न?" हठ करते हुए बड़े प्यारे स्वर में उसने पूछा।

शारदा ने यों बालकृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया। भाषागर्भित, सुंदर ढंग से बताया गयी शारदा की वर्णन- शैली को सुनकर जगन्नाथ पंडित अवाक् रह गये। उसे उसका यह वर्णन बड़ा ही सुमधुर लगा। अनायास ही उसकी दृष्टि रतन पर गयी। लग रहा था मानो वह अपने को ही यशोदा समझ रहा है। उसके मुख पर कांति बिराजमान थी। वह दृश्य देखते ही बनता था।

पंडित जगन्नाथ ने फिर से एक बार अपनी बहू और रतन को गौर से देखा और घर के बाहर चला गया।

दूसरे ही दिन श्रीधर और शारदा ने देखा कि जगन्नाथ ने देखो कि जगन्नाथ स्वंय कृष्णलीला तरंगीणी का एक श्लोक नौकर रतन को सुना रहें हैं और उसे उसका भावार्थ भी सरल भाषा में बता रहे हैं। अकस्मात् उनमें आये इस परिवर्तन को देखकर वे दोनों चकित रह गये। उन्हें इसका कारण मालूम भी नहीं था। किन्तु बेटे और बहू को देखते ही जगन्नाथ के चेहरे पर जो शीतल व निर्मल मुस्कान फैल गयी, उसे देखकर उन्हें अपार आनंद हुआ।

बेताल ने कहानी सुनाने के बाद कहा "राजन, जगन्नाथ पंडित का कहना था कि रसिक श्रोता ही कविता सुनने के योग्य है। उसने यहाँ तक कह दिया कि अशिक्षित को कविता सुनाना सरस्वती का अपमान करना है, उसपर कीचड़

उछालना है। इसी बात को लेकर बाप-बेटे में बाद-विवाद होता था और बहुत बार उसने अपने बेटे को समझाया भी, धमकाया भी। ऐसा करने से उसे रोकने की नाकामयाब कोशिशें भी की। जब उसने सुना कि उसकी बहू कृष्णलीला तरंगीणी से श्लोक पढ़कर नौकर रतन को सुना रही है तो वह क्यों चुप रह गया? उसने क्यों बहू शारदा को ऐसा करने से नहीं रोका? उससे नाराज़ क्यों नहीं हुआ? इसका यह मतलब हुआ कि उसके बेटे से उसे ईर्ष्या हो गयी, क्योंकि वह भी पांडित्य में प्रवीण बनता जा रहा है और उसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। आख़िर वह स्वयं कृष्ण लीला तरंगिणी के श्लोक नौकर रतन को सुनाने लग गया। क्या उसका यह व्यवहार विचित्र व अनुचित नहीं लगता? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने तब कहा, ''अत्यंत प्रतिभाशाली पंडितों में साधारणतया स्वार्थ व अहंभाव होते हैं और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। बेटे की शादी जब तक नहीं हुई, बहू जब तक ससुराल नहीं आयी तब तक उसकी पहुँच जमींदारों व शिक्षितों तक ही सीमित थी। साधारण जनता से उसके संबंध, जहाँ तक पांडित्य व कविता की बात है, नहीं के बराबर थे। इसी कारण वह तब तक इस ग़लतफ़हमी में रहा कि अनपढ़ लोगों को कविता सुनाना बेकार है और साहित्य को कलंकित करना है। यह समझना ग़लत है कि वह अपने बेटे से ईर्ष्या करता है। यह ईर्ष्या व्यक्तिगत नहीं बल्कि साहित्य के मूल्यांकन को लेकर है। परंतु जब उसने अपने बहू के मुँह से कृष्ण लीला तरंगिणी का श्लोक सुना और देखा कि नौकर रतन के चेहरे पर इस श्लोक को सुनते हुए कितना आनंद है, तब पहली बार उसे अपनी भूल का एहसास हुआ। उसे अब मालूम हो गया कि सामान्य जनता से मुँह मोड़कर उसने कितनी बड़ी ग़लती की। वह इससे यह भी जान गया कि साधारण जनता में भी कविता-माधुर्य को चखने की शक्ति है। वे भी उसका मज़ा लूट सकते हैं। यह सत्य जान लेने के बाद उसने स्वयं ही नौकर रतन को श्लोक सुनाये और उनका भावार्थ भी बताया। इससे उसे अब आनंद भी होने लगा।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

गणपति बप्पा मोरया

सभी हिन्दू परिवारों में किसी भी नये कार्य के आरम्भ करने से पूर्व गणेश भगवान की पूजा करते हैं।

सर्वप्रथम पूजे जाने वाले गजानन का यह त्यौहार इस वर्ष अगस्त माह में ही है। इस त्यौहार को गणेश चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। जो पूरे भारत में तो मनाया ही जाता है लेकिन महाराष्ट्र में इसका महत्व अधिक है।

महाराष्ट्र में यह त्यौहार हिन्दू पंचांग के अनुसार भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष के चौथे दिन से शुरु हो जाता है। जो अंग्रेजी माह के अगस्त या सितम्बर माह में पड़ता है। यह त्यौहार दस दिन तक चलता रहता है और ग्यारहवें दिन अनन्त चतुर्दशी का गणपति का विसर्जन किया जाता है।

घर-घर में रखे हुए छोटी-बड़ी गणेश की मूर्तियाँ पूजी जाती हैं। लेकिन सामान्य रूप से गलियों में पांडाल में रखी गयी। सामान्य रूप से पूजी जानेवाली मूर्तियाँ काफी बड़ी होती हैं। सबसे बड़ी तो लगभग ८ से १० मीटर तक ऊँची होती हैं।

हैदराबाद खैरातावाद शहर में गणेश की मूर्तियाँ लगभग ३० फीट तक ऊँची होती हैं।

अनन्त चतुर्दशी के दिन सारी मूर्तियाँ पूरे बाजे-नाच के साथ गाते-बजाते विसर्जन के लिए ले जाई जाती हैं। मूर्तियों को फूलों, पैसों, तथा अन्य चीजों से सजाया जाता है।

'गणपति बप्पा मोरया' का गीत चारों ओर गूँज रहा होता है। लोग गाते हुए गणेश की आराधना करते हैं। नगाड़े तथा बाँसुरियों की आवाजें और मोहक बना देती हैं।

सारी मूर्तियाँ मुम्बई में समुद्र में विसर्जित की जाती हैं।

गणेश चतुर्दशी के दिन भगवान गणेश की मन पंसद मिठाई मोदक बनाई जाती है। जो चावल के आटे के पेड़े बनाकर उसके अंदर नारियल गुड़ भरकर घी में तला जाता है। मीठा भोजन गणेश चतुर्थी के

पहले दिन बनाया जाता है। जिसमें मोदक लड्डू, करंजी, चकली कड़बोली और अनारसस काफी प्रचलित हैं।

गणेश चतुर्थी पूरे भारत में अलग-अलग तरह से मनाई जाती है। उत्तर प्रदेश में विवाहित औरतें पूरे दिन व्रत रखती हैं और चाँद देखने के बाद ही खाना खाती हैं। दक्षिण भारत में भी लोग गणेश चतुर्थी को काफी उत्साह के साथ मनाते हैं। कर्नाटक में यह गौरी गणेश हुब्बा अथवा मोरी और गणेश के नाम से मनाया जाता है।

तमिलनाडु में यह त्यौहार सभी घरों में परंपरागत रूप में मनाया जाता है। लोग गणेश का एक मिट्टी का विग्रह खरीदते हैं और कागज से बना एक छत्र भी ले आते हैं। लड्डू और एक अन्य मिठाई कोड़ाकट्टई भगवान को चढ़ाई जाती है। नोवैद्या सम्प्रदाय का पूजा, जो महाराष्ट्र में होता है, वह अब पूरे देश में मनाया जाने लगा है।

कब गणेश जनता के पास गए!

चलिए एक क्षण के लिए हम सन् १८९४ में जायें। भारत अंग्रेज़ी शासन के अधीन था।

क्या तुम जानते हो?

- हाथी परंपरागत रूप से अपनी महानता के लिए प्रसिद्ध हैं। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भगवान गणेश भी अपने हाथी के सिर के साथ अपनी महानता के लिए प्रसिद्ध हैं।
- हाथी का सिर ही किसी भी जानवर के शरीर की आकृति में से ऐसा है जो ॐ के आकार का है।
- क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इतने भारी हाथी के सिर के साथ भगवान गणेश अपने वाहन के रूप में केवल एक छोटे से चूहे से काम चलाते हैं। गणेश का पूरा चित्र एक हाथी का सिर, एक मनुष्य का आकार और एक छोटा चूहा है। जो यह प्रमाणित करता है कि प्राणी चाहे कितना ही छोटा या बड़ा हो लेकिन भगवान की दृष्टि में वह समान है।

भारतीय लोग उत्साह शून्य थे और अपने भविष्य के प्रति असहाय थे। पूरा देश एक समस्या में था। यह वही समय था जब काँग्रेस के नेता बाल गंगाधर तिलक ने आगे बढ़कर महाराष्ट्र की जनता को संगठित किया। उन्होंने गणेश चतुर्थी को एक उत्सव किया और इसमें अधिक से अधिक लोगों को भाग लेने के लिए कहा। उन्होंने इस उत्साह भरे त्यौहार को लोगों में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक भावना भरने के हथियार के रूप में प्रयोग किया। देश भक्ति गीत और सामुहिक नृत्य त्यौहार का अंग बन गए। लोक नाटक जैसे कि तमाशा भी रंगमंच पर खेले गए, जिनके द्वारा लोगों में देश भक्ति की भावना भरी गई।

गणेश का सिर

क्या आप जानते हैं कि भगवान गणेश को हाथी का सिर कैसे मिला? इस रोचक घटना को बताने के लिए अनेक रोचक पौराणिक कथाएँ हैं।

कहा जाता है कि जब गणेश देवी पार्वती के यहाँ पैदा हुए तो उन्होंने बच्चे को आशिर्वाद देने के लिए सभी देवी-देवताओं को आमंत्रित किया। सभी लोग आए और पार्वती को बधाई दी तथा शिशु गणेश को देखा और आशिर्वाद दिया। परन्तु शनि ने बच्चे को देखने से मना कर दिया।

पार्वती शनी के इस व्यवहार से काफी दुःखी हुईं। फिर शनी ने उन्हें बताया कि उसे ऐसा श्राप मिला है कि यदि वह किसी को देख ले तो वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। लेकिन पार्वती ने एक न सुनी। उन्होंने शनी को अपने बच्चे को आशिर्वाद देने के लिए जोर देकर कहा।

भगवान गणेश के बारे में आप कितना जानते हैं?

इन प्रश्नों का उत्तर देने की कोशिश करो !

१. भगवान गणेश के भाई कौन हैं?

२. *महाभारत* की कथा किस ऋषि ने गणेश को बताई? जिन्होंने छोटे लेखक के रूप में अपने को उजागर किया?

३. गणेश चतुर्थी कब मनाई जाती है?

४. गणेश की मनपसंद मिठाई क्या है?

५. गणेश चतुर्थी के ग्यारहवें दिन को क्या कहते हैं?

६. हाथी का सिर किस चिन्ह का सूचक है?

७. भारतवासियों को गणेश चतुर्थी नए रूप में मनाने के लिए उत्साहित किसने किया?

८. गणेश के टूटे हुए दाँत के लिए कौन उत्तरदायी था?

बहुत संकोच के साथ शनि ने आकर बच्चे पर एक दृष्टि डाली और तुरंत ही गणेश का सिर टुकड़े हो गया। पार्वती यह देखकर बेहोश हो गयीं और उन्होंने गणेश को तभी देखा जब उन पर हाथी का सिर लगाया जा चुका था।

इसके अतिरिक्त एक और कथा है। कहा जाता है कि देवी पार्वती ने मिट्टी से एक बालक का आकार बनाया और उसमें प्राण प्रवाहित कर दिया। अब जब वह नहाने गयीं तो द्वार पर उस बालक को बिठाकर कहा कि वह वहाँ पहरा दे तथा किसी को अन्दर न आने दे। तभी शंकर भगवान आये और भीतर जाने लगे। बच्चे ने उन्हें भीतर जाने से रोका। जिसके कारण शंकरजी ने क्रोध में आकर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। जब पार्वती को यह पता चला तो वे रोरोकर मूर्छित हो गयीं। उन्हें समझाना कठिन था। भगवान विष्णु बच्चे के धड़ से जोड़ने के लिए एक सिर की तलाश में गए और लौटे तो उनके हाथ में हाथी के बच्चे का कटा हुआ सिर था।

रंग-भरो

यहाँ एक सुन्दर गणेश का चित्र है। जो कुछ भी भगवान को चाहिए वह रंगों से भरो। तो किसका इंतज़ार है? शुरु हो जाओ!

पहले पन्ने की प्रश्नोत्तरी का उत्तर

अपने अंकों का पता लगाईए !

१. भगवान कार्तिकेय, जिनका वाहन मोर है।
२. व्यास ऋषि।
३. भाद्रपद के कृष्ण पक्ष के चौथे दिन। जो अगस्त या सितम्बर में आता है।
४. मोदक एक मीठी वस्तु है जो नारियल और गुण के मिश्रण से भर कर बनाई जाती है।
५. अनन्त चतुर्दशी।
६. 'ॐ' का चिन्ह।
७. बाल गंगाधर तिलक, स्वतंत्रता सैनानी।
८. परशुराम, जो अपने क्रोध के लिए प्रसिद्ध हैं।

होड्जा की एक कहानी
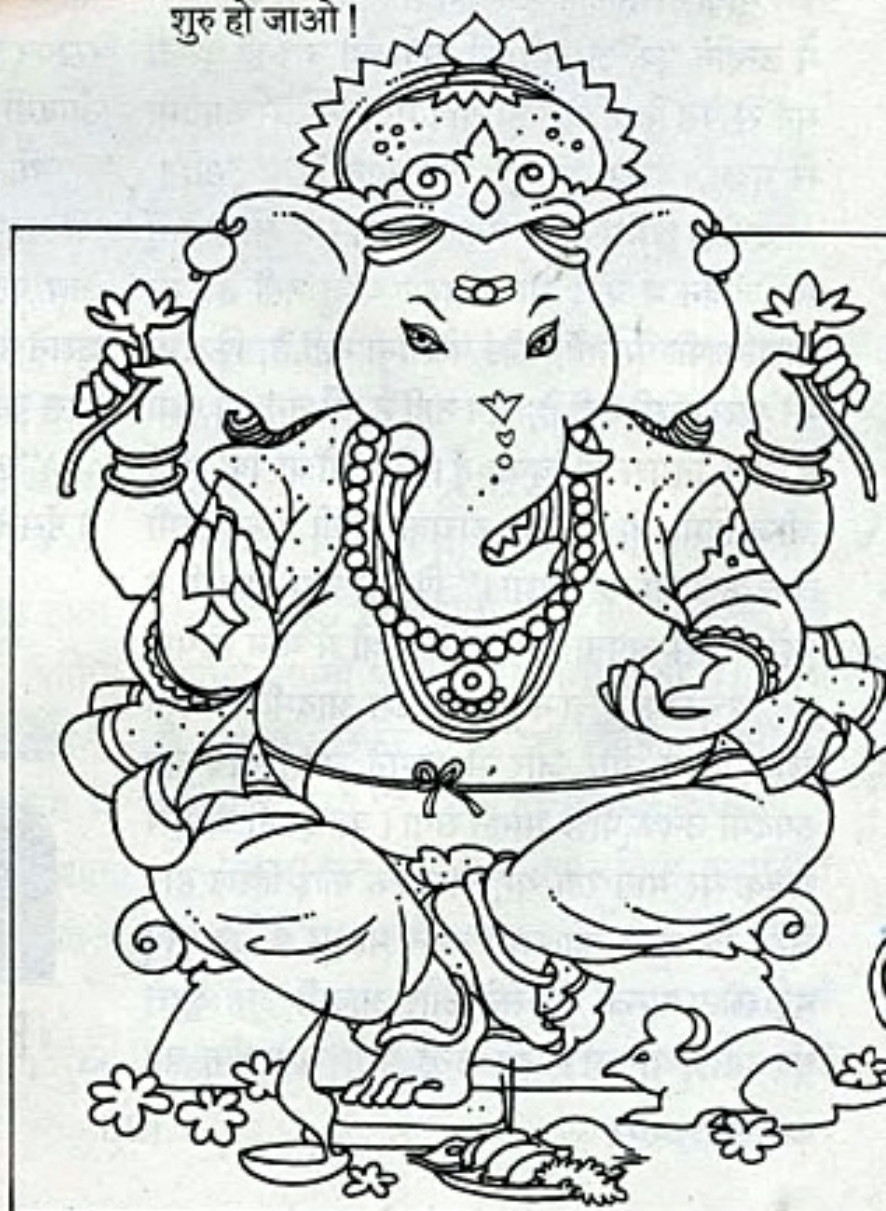
खुशी बाँटना

मुल्ला नसीरुद्दीन एक दिन शहर जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक आदमी को देखा जो बड़े ही दुःखी मन से पेड़ के नीचे बैठा था। मुल्ला ने उस आदमी से पूछा, "क्या हुआ? क्या बात है?" 'ओह' आदमी ने लम्बी साँस लेकर कहा। "मैं सोचता हूँ कि जीवन में कोई भी रुचिकर वस्तु नहीं है। मेरे पास काफी पैसा है, कोई परेशानी नहीं है, फिर भी मेरे पास खुशी नहीं है, चैन नहीं है। मैं तंग आ गया हूँ और निराश हो चुका हूँ। मैंने सोचा कि कोई चीज होगी जो मेरे लिए रुचिकर होगी परन्तु अभी तक कुछ भी नहीं सूझा।" फिर से उस आदमी ने बुझे मन से अपना सिर अपने हाथों में थाम लिया।

अचानक मुल्ला ने दौड़कर उस आदमी का थैला छीन लिया और जोर से भागने लगे। अब वह आदमी उनके पीछे भागने लगा। वह इतनी जोर से सड़क पर भाग रहा था, जैसे कि कोई हिरण हो। जैसा कि मुल्ला को सभी रास्ते मालूम थे, इसलिए वह छोटा रास्ता ढूँढ़ लेते और आदमी उन्हें ढूँढ़ते हुए पीछे भागता। जब उन्हें पता चला कि वह काफी दूर निकल आए है तो वह थैले को रास्ते पर रखकर एक तरफ़ थोड़ी दूर पर बैठकर उस बुझे दिल आदमी की प्रतीक्षा करने लगे।

थोड़ी देर बाद वह अभागा आदमी वहाँ आया। जो काफी थका और परेशान दिखाई दे रहा था। अब वह थैला खो जाने से और दुःखी था। तभी उसने रास्ते पर अपना थैला देखा। अपना थैला मिल जाने से वह खुश हो गया और चिल्लाने लगा।

"खुशी देने का यह भी एक तरीका है।" मुल्ला ने हँसते हुए कहा।

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झांकियाँ युग-युग में सत्य के लिए इसकी गैरवममी खोज

१९. मंदिरों की कथाएँ - अद्‌भुत सत्य

''तुम सब लोग बड़े भाग्यवान निकले। तुम लोगों का भाग्य देखते हुए मुझे लगता है कि मैं भी छोटी बच्ची बन जाऊँ और तुम्हारे दादाजी से कहानियाँ सुना करूँ'' माँ जयश्री ने बच्चों से कहा।

''छोटी बच्ची बन जाने में तुम्हे आनंद होता होगा। तब श्यामला और संदीप का क्या होगा? वे तो नहीं रहेंगे ना?'' कहता हुआ संदीप अपनी बहन के साथ माँ के बनाये पकवान थालियों में भरकर मेज़ पर रखने लगा। उन लोगों ने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया था कि देवनाथ वहाँ पहले से ही बैठे हुए हैं।

''जैसे उन्हें कहानियाँ सुनायी, वैसे ही तुम्हे भी सुनाऊँगा बहू। पर तुम तो हमारे साथ बैठकर खाती ही नहीं हो।'' देवनाथ ने बड़े प्यार से कहा।

''आपसे जो-जो कथाएँ श्याभला सुनती रहती है, मुझे भी बताती रहती है। पर कहने की उसकी अपनी पद्धति और शैली होती हैं। आज मैं आपसे पूछकर अपने चंद संदेहों को भी दूर करूँगी'' कुर्सी पर बैठती हुई जयश्री ने कहा।

''वाह! तब तो आज हम बढ़िया कहानियाँ सुननेवाले हैं'', संदीप ने कहा। ''नहीं बेटे, मैं जो प्रश्न पूछने जा रही हूँ, उससे शायद कहानियाँ नहीं निकलेंगी'' फिर उसने अपने ससुर की ओर

मुड़ते हुए पूछा "मंदिरों से संबंधित कथाओं में किस हद तक वास्ताविकताएँ हैं? कहाँ तक वे सची हैं? यही मेरा प्रश्न भी और संदेह भी है" जयश्री ने कहा।

"कहानियों में ऐतिहासिक वास्तविकताएँ हैं। कल्पनापूरित कहानियों में इन वास्तविकताओं का नदारद हो जाना भी सहज है। कल्पनाओं से वास्तविकताओं को अलग करने के समर्थ व सकल प्रयास अब तक नहीं हुए। इस दिशा में अनुसंधान नहीं हुए, क्योंकि ऐसे अनुसंधान के लिए प्रर्याप्त परिश्रम करना पड़ता है। कहानी की आड़ में जो वास्तविकता छिपी हुई है, उसे प्रकाश में लाने में ही अनुसंधानकर्ता की प्रतिभा व विजय निर्भर होती है।" देवनाथ ने कहा।

"इसका एक उदाहरण दे सकते हैं दादाजी?" संदीप ने पूछा।

"अवश्य! काशी विश्वनाथ मंदिर हमारे देश के अति प्राचीन मंदिरों में से एक है। नगर वाराणसी संसार के प्राचीन नगरों में से एक है। देवदास उस नगर का अधिपति था। भगवान शिव उससे क्रोधित हो गये और नगर छोड़कर चले गये। शिव ने सोचा था कि उनके वहाँ से चले जाते ही वह नगर उजड़ जायेगा, उसका नामो निशान नहीं होगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ। राजा धर्मपरायण था, इस कारण वहाँ की जनता सुख व शांति से जीवन-यापन करने लगी। किन्तु राजा को यह जानने में देर नहीं लगी कि केवल ऐहिक सुख ही सब कुछ नहीं है। शारीरिक सुख चाहें ताष्कालिक रूप से मनुष्य के मन को सुख एंव शांति दे, परंतु वे स्थायी व स्थिर शांति व सुख नहीं दे सकते। उन्हें लगा कि परलोक के जीवन के बारे में भी उसे सोचना चाहिये और आवश्यक सावधानियाँ पहले से ही बरतनी चाहिये। इसके लिए चाहिये दैव चिंतन और दैव से ऐक्य। यही जीवन परमार्थ भी हैं। कहते हैं कि राजा ने जैसे ही इस कठोर सत्य को जाना और माना, परमशिव पुन: नगर लौट आये।

"इस कथा की आड़ में क्या सत्य छिपा हुआ है दादाजी?" संदीप ने पूछा।

"वाराणसी में बहुत पहले बौद्धमत का प्राचुर्य था। परंपरा से चली आती हुई शिवभक्ति कम होती

गयी। तुम लोगों को मालूम ही होगा कि बौद्ध दैव को परमार्थ नहीं मानते। कह सकते हैं कि शिव का पुनरागमन इस बात का संकेत है कि फिर से लोगों ने सनातन मार्ग को अपनाया। यही इस विषय में छिपा हुआ सत्य है।'' देवनाथ ने कहा।

''तब तो आपके कहने का यह मतलब हुआ कि पुरणों को केवल कथाएँ मात्र समझकर सुनना काफी नहीं है। उसके ऐतिहासिक अंशों को भी समझना ज़रूरी है। है न दादाजी?'' संदीप ने पूछा।

''हाँ, केवल ऐतिहासिक अंशों को ही नहीं बल्कि इनके द्वारा उस काल की सामाजिक व सांस्कृतिक स्थिति गतियों की भी जानकारी हम प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए जगन्नाथ के इतिहास को ही लो। ब्राह्मण युवक विधायति ने एक भील युवती से विवाह रचाया। खास बात तो यह है कि उनकी संतान को मंदिर के पुजारी बनने की जिम्मेदारी भी सौंपी गयी। हज़ारों सालों के पहले और बाद भी आचरण में दिखायी देनेवाली उन्नत जातियों के हठ विद्यमान नहीं थे। यह इस कहानी के द्वारा जाना जा सकता है'' देवनाथ ने कहा।

''पहले भोजन कर लीजिये, फिर और बताइयेगा'' खाना परोसते हुए जयश्री ने कहा।

भोजन कर चुकने के बाद देवनाथ यों कहने लगे'' मधुरा मीनाक्षी की कहानी ही लो। मीनाक्षी देवी इकलौती पुत्री थी, इसलिए अपने पिता की मृत्यु के बाद सिंहासन पर विराजमान हुई। उन्होने शासन सुचारू रूप से चलाया। किन्तु पड़ोसी राज्यों के राजकुमारों ने संदेश भेजा कि वे उनमें से किसी एक को अपना पति चुनें और पति को सिंहासन सौंप दें। मीनाक्षी ने उनकी इस मांग को अस्वीकारा। उन सबने मिलकर उनपर आक्रमण कर दिया। बड़े ही साहस के साथ उन्होंने राजकुमारों का सामना किया, उनके छक्के छुड़ा दिये। राजकुमारों को हार माननी पड़ी। पुरूषों के अहंकार को तोड़ डाला। यह इस बात का उदाहरण है कि साहस, युद्ध-नैपुण्य पुरूषों की ही बपौती नहीं है।'' यों कहते हुए देवनाथ सोच में पड़ गये।

''रूक क्यों गये दादाजी, आगे बढ़िये'' संदीप ने कहा।

''शायद थक गये। थोड़ी देर विश्राम लेने दो। जल्दबाजी मत करो'' जयश्री ने धीरे से कहा।

देवनाथ सोच में लीन थे, इसलिए उन्होंने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। फिर अपने को संभालते हुए मुस्कुराते हुए वे यों कहने लगे:

''वैसे तो कई कहानियाँ हैं। उनमें से कुछ विषाद भरित भी हैं। उदाहरण के लिए कोणार्क के सूर्य मंदिर से संबधित कहानी को ही ले। नरसिंहदेव कलिंग देश का शासक था। अपने राज्य के बारह हजार शिल्पियों निपुणों व मजदूरों को मंदिर के निर्माण कार्य में लगाया। निर्विराम उन्होने बारह सालों तक मेहनत की। रथ के आकार में मंजिलों का निर्माण होता गया। दो हजार टनोंवाले भारी पत्थर दो सौ फुटों की ऊंचाई पर ले जाये गये। यह उन दिनों में कैसे संभव हुआ, हमारी कल्पना के भी बाहर है।

मंदिर का निर्माण अंतिम दशा पर पहुँचा। गोपुर के कलश को बड़े ही बिलक्षण ढंग से बैठाना था। बारह सालों के पहले जब मंदिर का निर्माण शुरू हुआ, तब उन्होने इस काम के लिए कुछ सूत्र निर्धारित किये। अब वे उन मूल सूत्रों को भूल गये। मंदिर के निर्माण-कार्य में बिलंब होने लगा। उस दिन सबेरे जब राजा वहाँ पहुँचे तब वहाँ की स्थिति को देखकर बहुत ही नाराज़ हो उठे। वे अपनी सहिष्णुता खो बैठे प्रधान श्ल्पी ने बिशु महाराणा को बुलाकर सावधान कर दिया कि कल सूर्योदय तक निर्माण का कार्य पूरा नहीं होगा तो परिणाम बहुत बुरा होगा और उनपर कड़ी से कड़ी कार्यवाई की जायेगी।

विशु महाराणा दुविधा में पड़ गये। यह सोचते हुए वे एक शिला पर बैठ गये कि क्या किया जाए। तब वहाँ पंद्रह साल का एक किशोर उनके पास आया। बातों-बातों में उन्हें यह मालूम हो गया कि यह बालक कोई और नहीं है, उन्ही का बेटा धर्मपाद है, जिसे बारह सालों के पहले अपने गाँव में छोड़कर चले आये थे। विशु की आँखों से खुशी के मारे आँसू बहने लगे।

अपने पिता की निगरानी में निर्मित होते हुए इस मंदिर को देखने की इच्छा धर्मपाद में जगी। तब उसे यह भी मालूम पड़ा कि उसके पिता व अन्य शिल्पियों को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जब वह गाँव में था तब

उसने दाड में सुरक्षित रखे गये दादा-परदादाओं के तालपत्र ग्रंथों का पठन किया था। उनमें मंदिर के निर्माण से संबंधित बहुत विषय थे। उसने उनका संपूर्ण अध्ययन किया।

गोपुर के कलश को कैसे बिठाना है, यह भी उन विषयों में से एक था। तालपत्र ग्रंथो में लिखी ये सारी बातें अब उसे याद आयी। उसने अपने पिता को इस समस्या का समाधान बताया। उन्होने अपने सहशिल्पियों से यह रहस्य बताया। सबने मुक्तकंठ से माना कि यही सही मार्ग है। सूर्यास्त तक गोपुर के शिखर पर कलश बैठाया गया।

अब शिल्पियों के आनंद की सीमा न रही। अपनी विजय पर वे हर्षित हो उठे। उन्हें पूरा विश्वास था कि महाराज उनकी सफलता पर उनकी प्रशंसा करेंगे और उन्हें मूल्यवान पुरस्कार देंगे। उनके हृदय आनंद व उल्लास से भरे हुए थे। धर्मपाद को अपने कंधों पर चढ़ाकर वे मस्त नाचने-गाने लगे।

उस समय एक ने कहा "जो काम बारह सौ कुशल शिल्पि नहीं कर सके, वह काम पंद्रह साल के एक बालक ने कर दिखाया। यह सच्चाई जानने पर महाराज क्या हमें माफ़ करेंगे? हमारे नैपुण्य की हंसी नहीं उड़ायेंगे?"

दुर्भाग्यवश वे बातें धर्मपाद के कानों में भी पड़ी। वह कोमल हृदय का था। उसका हृदय पीड़ा से छटपटाने लगा। उसे लगा कि भलाई इसी में है कि वह चुपचाप यहाँ से चला जाए, जिससे उसके और उसके काम के बारे में किसी को जानकारी नहीं होगी। मंदिरों के निर्माण का श्रेय शिल्पियों को ही मिलना चाहिये, वे ही इसकी प्रतिभा रखते हैं। उसने महसूस किया कि इसका श्रेय मुझे मिले, इससे बड़ा अन्याय और कुछ नहीं होगा।

वह पूर्णिमा की रात थी। उमड़-उमड़कर सागर की तरंगे आलय के प्रांगण को छू रही थी। धर्मपाद मंदिर के गोपुर पर चढ़ गया और शिखराग्र पर बैठ गया। चंद लोगों ने देखा कि वह वहाँ बैठकर तरेक दृष्टि से गंभीर समुद्र को देख रहा है। उसके बाद किसी ने भी, कहीं भी उसे नहीं देखा। उसका जीवन गूढ रहस्य ही बता रहा है।"

"हृदयों को हिला देनेवाली घटना है यह" जयश्री ने आह भरते हुए कहा।

(क्रमशः)

भारतीय शास्त्रीय नृत्य

ओडिसी नृत्य

मूर्तियों की आकृति और भंगिमायें एक सुन्दर नृत्य - यही है ओडिसी।

पुरातत्ववेत्ता कहते हैं कि ओडिसी सबसे पुराना भारतीय शास्त्रीय नृत्य है। ओडिसा के रानी गुम्फा गुफा में सुन्दर ओड़िसी नर्तकियों के चित्र हैं। ये गुफाएँ २०० बी.सी. की बताई जाती है। कहा जाता है कि ओड़िसी नृत्य की भंगिमाओं से पूर्ण ये मूर्तियाँ और चित्र भरत मुनि के नाट्य शास्त्र से भी पुरानी हैं।

ओडिसी के मौलिक चिन्ह उत्तर भारत के मंदिरों में वैदिक परंपरा के नृत्य समारोहों में देखने को मिलते हैं। नृत्य आयोजन लगभग ७०० बी.सी. में काफी प्रचलित हुआ जब महारिस अथवा मंदिरों में नर्तकियों ने आराधन नृत्य करना आरम्भ किया। उड़ीसा का सूर्य मंदिर सुन्दर नृत्य कलाओं-और कृतियों से भरा पड़ा है।

१६वीं शताब्दी के आरम्भ में किशोर बालक लड़कियों की भाँति पोषाक पहनकर मंदिर के प्रांगण में नृत्य करते थे। यह **गोदियुआ अथवा अखादपिला** नृत्य कहा जाता था।

अधिकतर मंदिरों में नटामंदिरा होती थी, जो पूर्ण रूप से भाँति-भाँति के नृत्य आकृतियों से सजी होती थी और अलग-अलग वाद्ययंत्रों को पकड़े होती थीं।

अधिकतर ओड़िसी नृत्य १२वीं ए.डी. के प्रसिद्ध कबि जयदेव के गीत गोविन्द ग्रन्थ पर आधारित हैं। कर्णप्रिय गीत-गोविन्द के पद राधा और कृष्ण के अमिट, प्रेम को नाट्य रूप में दर्शाते है।

थाली नृत्य में नर्तक या नर्तकी थाली को अपने पैर के पंजों में दबाते है। यह ओड़िसी का एक भाग है। दक्ष नर्तक और नर्तकियाँ कभी-कभी दो थालियों को अपने हाथ पर भी सँभालते हैं।

आडिसी नर्तकियाँ हमेशा गाढ़े रंग की सिल्क साड़ी पहनती हैं जो वहाँ की हथकरघा से बनी होती हैं। वे ऐसे गहने पहनती हैं जो पूर्ण रूप से ओड़िया पद्धति में चाँदी और सोने के होते हैं और जिन पर नक़ाशी होती है।

अन्य भारती शास्त्रीय बिधाओं की भाँति ओड़िसी के भी दो प्रकार हैं। पहला जिसे नृता कहते हैं। इसमें नर्तकियाँ अपने शारीरिक क्रिया-कलाप से सुन्दर भंगिमा प्रस्तुत करती हैं। दूसरा है अभिनय जिसमें ये लोग किसी चिन्ह जैसे कि हाथ, आँख और मुँह के द्वारा किसी कहानी और थीम का अभिनय करते हैं।

कोनार्क के सूर्य मंदिर का वार्षिक नृत्य उत्सव एक सुन्दर त्यौहार के रूप में चलता है। यह पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

तेनालीराम

सभी स्कूली बच्चों को यह पता है कि कृष्णदेवराय के दरबार में तेनालीराम सबसे चतुर और हास्यकार व्यक्ति थे। किसी भी वाद-विवाद में बंध जाने के बाद भी वे उससे बाहरविकल जाते थे। यह उनकी चतुर वाणी का कमाल था।

एक दिन ऐसा हुआ कि कृष्णदेवराय तेनाली राम से बड़े नाराज हो गए। "चले जाओ यहाँ से ! मैं तुम्हारी सूरत नहीं देखना चाहता।" उन्होंने कहा।

बहुत सारे दरबारी जो राम से काफी जलते थे, वे बड़े प्रसन्न हुए। वे लगभग तय कर चुके कि अब तेनाली अपने को नहीं बचा पायेगा। वे चकित थे कि अब वह क्या करेगा।

कुछ भी हो यह भी छोटी बातों की तरह तेनाली राम का कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अगले दिन वह फिर दरबार में हमेशा की तरह पहुँचा और साथ में एक मिट्टी का घड़ा भी ले लिया।

सारे दरबारी चकित होकर तेनाली को आते देखते रह गए। वे जानते थे कि राजा अभी भी नाराज हैं, और हो न हो वे तेनाली को शहर से बाहर ही निकाल दें।
तेनाली राम ने जो घड़ा लिया था, उसे अपने सर पर उल्टा रख लिया और अपने स्थाप पर बैठे गए जैसे कुछ हुआ ही न हो।
यह सब कुछ जिसने भी देखा, वे लोग रुकी हुई साँस के साथ फटी-फटी आँखों से देख रहे थे। अब राजा क्या करेंगे ''क्या मैंने तुम्हें कहा नहीं था कि तुम यहाँ नहीं आना?'' राजा चिल्लाये। ''तुम्हारी ये हिम्मत कि तुम भीतर आ गए और उसके ऊपर यह भद्दा सा घड़ा ओढ़ रखा है। तुम इससे क्या साबित करना चाहते हो?''
''महाराज क्षमा कीजिए।'' तेनाली ने घड़े के भीतर से कहा। ''मैं आपकी आज्ञा का पालन ही कर रहा हूँ। आपने कहा था कि आप मेरा मुँह नहीं देखना चाहते।'' राजा तेनाली की इस हरकत पर जोर-जोर से हँसने लगा और तेनाली की मुसीबत टल गयी।

उत्तर प्रदेश की लोककथा

उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल २३६,२८६ कि.मी. हैं। यह पूर्व से २४ और ३१ अंश के समानान्तर और ७७ तथा ८४ अंश के लम्बाई में फैला हुआ है। यह क्षेत्रफल लगभग आधे फ्राँस तथा ईंग्लैण्ड से थोड़ा बड़ा है। भारत का यह राज्य सबसे अधिक जनसंख्या वाला है। जिसकी जनसंख्या १३.२१ करोड़ है।

कहा जाता है कि यहाँ हर पाँच कोस या कि.मी. पर भाषा-शैली रहन-सहन बदल जाते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिन्दी भाषा यहाँ अधिक बोली जाती है। कुछ भाषायें और भी हैं, जिनकी मूल हिन्दी है परन्तु यह क्षेत्रीय भाषायें हैं - जैसे- हरियाणवी, कौरवी, बुन्देली, बृज, कन्नौजी, बोसका, अवधी और भोजपुरी भी है। इसके अतिरिक्त जो थोड़ा अलग है। वे है गढ़वाली और कुमाऊनी भाषायें।

अनोखा ज्योतिषी

सावित्री आजी की एक ही बेटी थी चमेली। सयानी होने पर आजी ने उसका विवाह एक अच्छे गुणी लड़के से कर दिया और अब वह सूत कातकर अपनी अकेली जान का परिवार बड़े संतोष से चला रही थीं। उनका दामाद फतिंगा बड़ा ही खुशमिजाज व्यक्ति था और चमेली को हमेशा सुखी रखता।

एक दिन आजी का दामाद फतिंगा अपनी पत्नी चमेली

को लेकर आजी से मिलने उनके घर आया। उन्हें आता देख आजी के पड़ोस का लड़का दौड़ा-दौड़ा आया और बोला, ''आजी, आपके बेटी दामाद आ रहे हैं।'' आजी बड़ी खुश हुई बोली, ''अरे ! सुन बलेसर, जरा फूला चाची से एक लोटा दूध तो लेता आ, कहना आजी के घर मेहमान आए हैं।'' बलेसर लोटा लेकर चला गया। उस समय आजी दाल-भात और तरकारी बनाकर चौके से छुट्टी पा रही थीं। जब उन्होंने सुना कि दामाद आ गया तो वे रोटी भी बनाने लगीं। चमेली तो जल्दी-जल्दी भीतर चली गई परन्तु फतिंगा वहीं घर के बाहर अगवाड़े-पिछवाड़े घूमकर मुआयना करने लगा। वास्तव में यह उसकी एक आदत थी। वह कहीं भी जाता तो अपनी चालाकी से कोई कारण ढूँढ लेता और लोगों को उल्लू बनाता। उस दिन भी वह उस मिट्टी से बने मकान को बड़े ध्यान से देखते जा रहा था। मुण्डेरों पर कितनी छोटी और कितनी बड़ी घोड़ियाँ हैं। खपरैल से छाये उस मकान की छाजन कितनी ऊँची हैं, फिर दिवारों पर गेरू और चूने के धब्बे, कितने जंगले हैं, आदि-आदि। घर के पिछवाड़े के जिस जंगले से धुआँ निकल रहा था, फतिंगा को वहाँ से कुछ आवाज सुनाई दी। वह कुछ देर वहीं पर खड़ा रहा, फिर मुस्कुराता हुआ चल दिया।

सावित्री आजी बेटी-दामाद को देख बड़ी खुश हुईं। उनका आदर किया हाल-चाल पूछा। फिर उनके लिए भोजन परोसने की तैयारी करने लगीं। पहले रसोई की ठहर को कच्ची मिट्टी से लीप लिया, फिर चमचमाती हुई फूल की थाली और गोड़ेदार

खान-पान

उत्तर प्रदेश के मैदानी इलाके की मुख्य फसल गेहूँ, चना, दालें, मटर, गन्ना तथा सरसों है। इसलिए उनका खान-पान भी उसी पर निर्भर करता है। गर्मी में सादे भोजन के साथ दही, घी सभी हरी सब्जियाँ, टिंडा, भिंडी तथा साग इसे स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक बनाते हैं। चावल दाल, रोटी यह मुख्य भोजन होता है।

सबसे ज्यादा मिट्टी के बर्तन में उबाला हुआ दूध जिसमें थोड़ा गुड़ मिलाकर स्वादिष्ट पेय बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त ताजी दही की छाछ भी।

सर्दी के दिनों में मौसमी सब्जियाँ, सागों में सरसों, सोया और पालक भोजन का हिस्सा बन जाते हैं। रोटी, गेहूँ के आटे के साथ चने और बाजरे की भी बनती है जो शरीर को गरम रखती है। भोजन में शर्करा की मात्रा को पूरा करने के लिए गन्ने के जूस में खीर बनाई जाती है।

त्यौहारों के समय में विशेष पकवानों में बेसन के लड्डू, शकरपारा और बर्फी जो खोये से बनती है, काफी प्रचलित है। बूंदी के लड्डू होली के समय में बनाए जाते हैं, जिससे थोड़ी सी भाग मिला दी जाती है। रंगों के त्यौहार की भाँति ही पकवान भी काफी रंग-बिरंगी होती हैं। पूरी और पुलाव तथा मिठाईयों में खाने वाला रंग मिलाया जाता है।

कटोरों में खाना परोसा। एक बड़े कटोरे में साढ़ी (मलाई) वाला दूध, एक छोटे कटोरे में चौलाई का साग, एक में अरहर की सादी दाल, ऊपर से देशी घी चमक रहा था। थाली में एक तरफ रोटी और एक तरफ आलू की भुजिया, साथ में आम का अंचार, लोटे-गिलास में पानी रखकर आजी ने बेटी-दामाद को खाने के लिए ठहर पर बुलाया। फतिंगा ने देखा कि उसकी थाली में पाँच रोटियाँ और चमेली की थाली में चार तो उसने अपनी सास से पूछा, "अम्मा, आपने सारी रोटियाँ हमें परोस दीं, अब आप क्या खायेंगी?" फतिंगा ने नौ बार रोटी बनाने की आवाज सुनी थी। इसलिए उसे पता था कि आजी ने सिर्फ नौ रोटियाँ ही बनाई हैं।

"अरे नहीं! अभी रोटियाँ हैं न।" कठवत को पीछे टारते हुए आजी ने कहा। अब वे कैसे कहती कि उन्होंने नौ रोटियाँ ही बनाई थीं। तब फतिंगा

परम्परागत हस्तकलाएँ

उत्तर प्रदेश रेशमी साड़ियों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ की अधिकतर सिल्क साड़ियाँ बनारस और मुबारकपुर से आती हैं। मुबारकपुर उत्तर प्रदेश का सिल्क भंडार है। यह अपने परम्परागत जरी की बुनाई के लिए प्रसिद्ध है।

त्यौहारों के समय पर औरतें दिवारों और चौखटों पर रंग-बिरंगी रंगोली बनाती है। रंगोली स्वास्तिक के आकार में, कमल का फूल तथा अन्य चौकी आकारों में बनाई जाती है। होली में इनमें गुलाल भरा जाता है, दिवाली के समय में गेहूँ का आटाऔर कुछ त्यौहारों में चावल के आटे से बनाई जाती हैं।

ने कहा, ''अम्मा, मुझसे मत छिपाईए मैं तो ज्योतिषी हूँ। सच बता सकता हूँ।'' चमेली ने आश्चर्य से अपने पति को देखा और पूछा, ''बताईए तो माँ ने कितनी रोटियाँ बनाई हैं?'' फतिंगा ने आँखें बंद की और मन में कुछ बुदबुदाया फिर कहा, ''हाँ नौ रोटियाँ।'' जब चमेली ने कठवत देखी तो उसमें कुछ न था। आजी ने खिसियाते हुए कहा, ''मैं भात खा लूँगी। बेटा ! तुम रोटियाँ क्यों गिन रहे हो? खाओ !''

अब क्या था ! सावित्री आजी तो अपने अच्छे गुणी दामाद की प्रशंसा करते पहले ही न थकती थीं, अब गाँव भर को पता चल गया कि आजी का दामाद ज्योतिषी भी है। परन्तु चमेली मन ही मन हैरान थी।

तीज-त्यौहार

अप्रैल माह में पड़नेवाले हिन्दी के महीने चैत्र में उत्तर प्रदेश के लोग नवरात्रि मनाते हैं। जो देवी दुर्गा का पूजन का त्यौहार है। अष्टमी को रात्रि समय में देवी की पूजा की जाती है और विशेष रूप से भोजन बनाकर चढ़ाया जाता है। इस पूजा को बसिअऊरा कहते हैं। कुछ अन्य जातियों में सात तरह के भोजन पकाकर देवी के सातों रूपों को चढ़ाया जाता है। चावल के आटे को पानी में घोलकर घर के सामने रंगोली बनाई जाती है और सिंदूर भी लगाया जाता है।

दूसरे दिन दोपहर को खाना खाने के बाद दोनों माँ-बेटी बातें करते-करते गेहूँ के सींक का पंखा बना रही थीं और फतिंगा आराम से नींद ले रहा था। तभी कल्लू धोबी भागा-भागा आजी के घर आया और बोला कि ''आजी सुबह से न जाने मेरा गधा कहाँ चला गया है, जरा दामादजी से कहो कि बता दें !''

''अच्छा ठहर, सो रहे हैं, अभी पूछती हूँ।'' आजी ने कहा और दामाद को जगाकर पूछा। अब तो फतिंगा बड़ी हैरानी में पड़ा कि अब क्या करे। फिर उसने आँखे बंद करके सोचा ''इस गर्मी के दिन में सब जगह तो सूखा है सिर्फ राजा के महल के सामने हरी-हरी घास है। गधा वहीं होगा।'' उसने झट से आँखे खोली और कहा, ''गधा चरे राजदुआरी, हाँ राजा के बगीचे में।'' जाकर देखा गया तो सचमुच गधा वहीं था। अब तो फतिंगा की ज्योतिष और भी प्रसिद्ध हो गई।

तीसरे पहर आजी दामाद के लिए गुड़ का शर्बत बनाने के लिए कुएँ का ठंडा पानी ले आयीं फिर चुरमुरी (लाई) भुना ले आयीं। फतिंगा बड़े चाव से दही डाला गुड़ का शर्बत पी रहा था और लाई खा रहा था कि तभी सेनापति शेरसिंह का घोड़ा खो गया।

वे भी फतिंगा के पास आये। अब तो फतिंगा की हालत खराब। उसने सोचा अब जरूर पोल खुल जायेगी। फिर उसने आँखे बंद की और सोचा "काम से थककर भूखा-प्यासा घोड़ा भूसा-घर के सिवा और कहाँ हो सकता है?" उसने तुरन्त कहा, "छूटे जो घोड़ा तो भुसऊले जाय! आपका घोड़ा भूसे की कोठरी में खड़ा भूसा खा रहा है।"

वास्तव में घोड़ा वहीं मिला। सेनापति ने खुश होकर फतिंगा को दो चाँदी के सिक्के इनाम में दिये। लेकिन फतिंगा मन ही मन डरने लगा कि यदि कोई और आ गया ज्योतिष पढ़ाने तो भांडा फूट जायेगा। इसके बाद उसने अपनी पत्नी से कहा, "चलो हम सुबह ही घर चलेंगे।" पत्नी ने सोचा "पाँच-छः दिन रहने के लिए कहकर आए और अब दो दिन में ही जाने की बात?" उसकी कुछ समझ में न आया।

अगले दिन सुबह वे लोग जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि राजमहल से एक नौकर दौड़ा-दौड़ा आया और हाँफते हुए बोला, "फतिंगाजी हमारी रानी कनकलता जी का नौलखा हार खूँटी पर से गायब हो गया। जरा विचारिए तो कहाँ गया?"

फतिंगा के पैरों तले से जमीन खिसक गई। उसने झट पूछा, "रानी ने हार कहाँ रखा था?"

"जी अपने पलंग के पास गड़ी एक खूँटी में हँसुली, नथिया, झुमका कड़े-छड़े, पैजनी करधनी बाजूबंद सभी टांगे थे, वहीं हार भी टाँग दिया था। परन्तु हार ही गायब है।" नौकर ने बताया।

"अब जो भी हो कुछ न कुछ तो बताना ही पड़ेगा", फतिंगा ने आँखे बंद करके विचारने का स्वांग किया। फिर उसे ख्याल आया पलंग के पास! तो रानी जरूर सो रही होंगी और कोई हार लेकर चला गया। उसने तुरंत कहा, "आयी निंदिया ले गई हार" उसका मतलब था कि नींद ही हार के खोने का कारण है। परंतु नौकर बोला, "मुझे तो पहले ही शक था कि यह निंदिया का ही काम है।" यह कहता हुआ वह तेजी से राजमहल लौट गया। वास्तव में रानी की एक

दासी का नाम निंदिया था। जब निंदिया से पूछा गया तो डर के मारे उसने हार लाकर दे दिया।

राजा दुर्गविजयसिंह बहुत दिनों से यह सब सुन रहा था। परंतु उसे बिश्वास नहीं था। उस दिन उसने फतिंगा को बुला भेजा और अपनी बंद मुट्ठी दिखाते हुए बोला,''फतिंगा यदि तुम यह बता दो कि मेरी मुट्ठी में क्या है? तो मैं तुम्हें अपने एक गाँव की जमींदारी सौंप दूँगा। और सच नहीं बताया तो तुम्हारा सर मुंडाकर गधे पर बिठाकर राज्य भर घुमाऊँगा।''

राजा की बातें सुनकर फतिंगा एकदम डर गया। उससे ज्यादा उसकी पत्नी, जो यह जानती थी कि उसका पति कोई ज्योतिषी नहीं है। फतिंगा ने भी यह पक्का जान लिया कि अब तो उसका झूठ साबित हो जायेगा और राजा दंड भी जरूर देगा।

फिर भी उसने भगवान का नाम लिया और आँख बंद करके कुछ सोचा, परन्तु कोई अनुमान न लगा पाया। जब उसे कुछ नहीं सूझा तो उसने डरते-डरते राजा से कहा, ''कुछ और नहीं, अब पड़ा फतिंगा राजा के हाथ।'' उसका मतलब अपने से था।

राजा ने मुट्ठी खोली और उसमें से एक फतिंगा नामक कीड़ा उड़ गया। यह देखकर फतिंगा के जान में जान आयी। सभी लोग वाह-वाह करने लगे। राजा ने खुश होते हुए कहा, ''मान गए तुम्हें फतिंगा ज्योतिषी। आज से हमारे एक गाँव की जमींदारी तुम्हारी।''

- अलका राय

पर्यटन

उत्तर प्रदेश सदा से एक धार्मिक और ऐतिहासिक खूबियों के लिए माना गया है। भारत की दो पवित्र नदियाँ गंगा और यमुना इस राज्य में बहती हैं। अयोध्या और मथुरा जैसे नगर पूर्ण रूप से भारतीय पौराणिक कथाओं के नायक राम और कृष्ण के जन्म से जुड़ी हुई हैं। गंगा के तट पर बसी वाराणसी नगरी अध्ययन और तीर्थ स्थान के रूप में प्रसिद्ध है।

विश्व के नौ महाआश्चर्यों में गिना जानेवाला 'ताज महल' आगरा में स्थित है। जिसे शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज की याद में बनवाया था।

क्या आप नाव चलाना पसंद करते हैं तो ऋषिकेश के पास तेज प्रबाहित होनेवाले गंगा के पानी में तो उतरिए। और कैसा रहेगा ऊँचाई से कूदना? ये खेल आपके रक्त को रोमांचित कर देते हैं और आप काफी अच्छा महसूस करते हैं। इसके अतिरिक्त आप बड़े ही शांत और अच्छे वातावरण को चुन सकते हैं। जैसे कि कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान की सैर।

समाचार झलक

विस्डेन में एक रशियन का नाम

अन्य कई देशों की भाँति रशिया में भी क्रिकेट नहीं खेला गया और न ही इस खेल में रशियन खिलाड़ी ही अधिक हैं। लेकिन एलेक्सी कोराबकिन इसके अपवाद हो सकते हैं। सेंट पीटर्सबर्ग का यह १७ वर्षीय स्कूली लड़का वर्तमान में ईंगलैण्ड के डोबेर कॉलेज केन्ट का छात्र है और कॉलेज टीम का माना-जाना गेंदबाज है। २००० के खेल के समय उसने ५९ ओवरों में १३ विकेट लिए थे। हाल ही में कॉलेज ने एकादश क्लब केन्ट के विरोध में मैच खेला, जिसमें कोरोबकिन ने २४ रन देकर ६ विकेट लिए। वर्ष के अतिरिक्त छात्र के रूप में उसे हाल ही में 'विस्डेन एलमानक' में प्रवेश दिया गया है। क्रिकेट की बाईबल जिसमें पहली बार क्रिकेट के क्षेत्र में रशियन का नाम आया है, कहती है कि एलेक्सी का उद्देश्य है कि जब वह अपना कॉलेज छोड़ेगा तो क्रिकेट को रशिया तक अवश्य ले जायेगा।

सौभाग्य के सूचक व्यक्तियों का नाम

आगामी १२ महीनों में फुटबाल प्रेमियों की जबान पर तीन नाम रहेंगे। जिसमें हैं, निक, काज़ और आटो, जो सन् २००२ के विश्व फुटबाल कप के सौभाग्य के सूचक व्यक्तियों को दिया गया है। यह नाम पूरे विश्व से आयी प्रविष्टियों द्वारा चुना गया है।

फिफा (FIFA) ने पहले मौलिक सौभाग्य सूचकों को आज्ञा दी। जिसमें एक सींघों वाला चमकील तीन लोगों का समूह, पूर्ण रूप से अंतरिक्ष यात्री लग रहा था। वे पीले, नीले और बैंगनी रंग के हैं।

सबसे धनी क्रिकेट खिलाड़ी।

क्या यह एक अंग्रेज खिलाड़ी है? नहीं। क्या यह आस्ट्रेलिया से आया है? नहीं। यह कोई और नहीं बल्कि अपना सचिन तेंदुलकर है। और यह क्रिकेट खेल नहीं जिसने उन्हें इतना धनी बना दिया है। उन्होंने हाल ही में विश्व स्तर पर अपना अनुबंध आगे बढ़ाया है जो वर्ष १९९५ से अब तक का था और अब ८० करोड़ रुपए का है। यह राशि उस राशि से कहीं अधिक है जिसे शाने बार्ने और ब्रियन लारा ने अभी तक कमायी है। पिछला अनुबंध केवल २४ करोड़ का था। काफी दिनों से सचिन उत्पादों के विज्ञापन में भी आ रहे हैं। यह सचिन का विश्व स्तर क्रिकेट पर छा जाना ही है कि 'वर्डटेल' ने इस प्रकार का प्रस्ताव भारतीय क्रिकेट हीरो को दिया है।

परिवारों के बीच प्रतिस्पर्धा

क्या तुमने कभी भी हॉकी खेल में दिए जाने वाले नाईक नेल्लामाक्कडा कप के बारे में सुना है? नहीं, लेकिन अब आप इसके बारे में अवश्य जान जाएँगे क्योंकि इसने 'गीनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में अपना नाम दर्ज करा लिया है। एक अनोखा हॉकी खेल कर्नाटक के अम्माथी स्थान में आयोजित किया गया जिसमें परिवारों द्वारा बनाई गई टीमों को चुना गया। यह टुर्नामेंट बड़े उत्साह के साथ काफी मनोरंजन पूर्ण रूप से २२६ परिवारों द्वारा खेला गया। फाईनल खेल में १३ मई को कूरथान्डा ने चेप्पुदिरा को ३-१ से हराया। इस खेल में इस वर्ष करीब हजारों गोल किए गए। गिनीज के प्रतिनिधि पूरे खेल तक वहाँ मौजूद थे और उन्होंने बताया कि इस प्रकार का खेल अपने आप में विश्व का पहल खेल है।

घास का लबादा

एक समय की बात है उत्तरी यूरोप में एक सज्जन व्यक्ति रहा करता था। जो बहुत ही धनवान था। उसके पास कई घर और कई एकड़ जमीन थी। उसकी तीन सुन्दर बेटियाँ भी थीं।

एक दिन उसने अपनी बड़ी बेटी से पूछा, ''तुम मुझे कितना प्यार करती हो?''

''क्यों?'' उसने प्रश्नभरी दृष्टि से देखते हुए पूछा और कहा, ''मैं आपको उतना ही प्यार करती हूँ जितना कि अपने जीवन से।''

वह आदमी बड़ा खुश हुआ। ''तुम बहुत अच्छी बेटी हो'' उसने कहा।

उसके बाद उसने वही प्रश्न अपनी दूसरी बेटी से भी पूछा।

'ओह, दुनिया में सबसे ज्यादा।'' उसने उत्तर दिया।

इससे वह सज्जन इतना खुश हुआ कि उसका ठिकाना ही न था। अब वह अपनी सबसे प्यारी तथा छोटी बेटी की मुड़ा और पूछा ''तुम क्या कहती हो मेरी सबसे प्यारी नन्हीं गुड़िया, तुम अपने पिता से कितना प्यार करती हो?''

उसे बड़ा ही विश्वास था कि उसकी बेटी उससे बहुत प्यार करती है। वह ऐसे ही उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था।

''क्यों? मैं तुम्हें उतना ही प्यार करती हूँ, जितना कि स्वादिष्ट भोजन में नमक।'' उसने कहा।

पिता को उत्तर पसंद नहीं आया। उसे कोई खुशी नहीं हुई।

''मैंने अभी तक आस्तीन का साँप पाल रखा था।'' उसने आश्चर्य व्यक्त किया। ''तुमने मुझे बहुत धोखा दिया। तुम मुझसे प्यार नहीं करती हो। मैं तुम्हें अपने घर में नहीं रख सकता। तुम यहाँ से चली जाओ और फिर कभी अपनी शकल मत दिखाना।

उस बेचारी ने अपने पिता का घर छोड़ दिया और भटकती रही। वह चलती गई, चलती गई और वहाँ तक पहुँच गई जहाँ कीचड़ में कुछ घास उगी हुई थी। उसने घास से एक टोपी बनाई और अपने अच्छे कपड़ों को बचाने के लिए ओढ़ लिया। और वहाँ तक चलती गई जहाँ एक बड़ा घर था। ''क्या आपको नौकरानी की आवश्यकता है?'' उसने उस सुन्दर सजीले घर का दरवाजा खटखटाकर पूछा।

''नहीं तो,'' रसोईये ने घर का दरवाजा खोलते हुए कहा।

''मेरा कोई नहीं है, जहाँ मैं जाऊँ। मैं कोई भी काम करने के लिए तैयार हूँ। जिसके बदले में मैं थोड़ा खाना और सर छुपाने के लिए छत माँगती हूँ।'' उसने दीनता से कहा।

''यदि तुम बर्तन साफ कर सकती हो तो तुम यहाँ रह सकती हो।'' उस बूढ़ी औरत ने कहा।

इस प्रकार बर्तन साफ करते हुए वह अन्य नौकरों के साथ रहने लगी। वे लोग उसे (केपओ रशेस) घास-की-टोपी बुलाते थे। क्योंकि उसने अभी तक अपना नाम नहीं बताया था और अपना लवाद नहीं उतारा।

एक दिन पड़ोसी घर में नाच का कार्यक्रम था और सभी नौकरों को यह देखने के लिए छुट्टी दी गई थी। वे बड़े ही उत्साहित थे और तैयार हो रहे थे। केपओ रशेस ने यह कहकर जाने से मना कर दिया कि वह काफी भारी बर्तनों के माँजने के कारण थक गई है। लेकिन ज्यों ही सारे लोग चले गए उसने अपना लवादा उतारा और तैयार होकर नाच देखने चली गई। वहाँ पर किसी ने भी इतना अच्छा कपड़ा नहीं पहना था। कोई भी लड़की केपओ रशेस की तरह इतनी खूबसूरत नहीं लग रही थी।

उसके मालिक के बेटे को उससे प्यार हो गया और वह सभी को छोड़कर उसके साथ नाचने लगा। अंत में सभी लोगों के जाने से पहले ही केप चली गई। जब सारे नौकर घर आये तो उसने यह दिखाया कि वह अपना घास का लवादा पहने सो रही है। सुबह उसने नाच-गाने के बारे में पूछा।

''ओह, कपओं रशेस तुमने बहुत अच्छा मौका गँवा दिया।'' उन लोगों ने कहा। ''एक बहुत ही सुन्दर औरत वहाँ आयी थी। वह इतनी

सुन्दर थी कि तुम्हारे मालिक के बेटे ने किसी और की ओर देखा तक नहीं।''

''मुझे उसको देखना चाहिए था।'' केपओं रशेस ने कहा।

''शामको वहाँ फिर एक नाच होनेवाला है। हो सकता है वह वहाँ आए। कोई भी नहीं जानता की वह कौन है और कहाँ चली गई।'' उन लोगों ने कहा।

उस शाम को भी केप ने यह दिखाया कि वह काफी थकी है। और बाहर नहीं गई।

लेकिन ज्यों ही सारे लोग चले गए, वह जल्दी से तैयार हुई और नाच में चली गई। मालिक का बेटा उसका इन्तजार कर रहा था। वह इधर-उधर उसी को देख रहा था। जब वह आयी तो उसने उसका हाथ पकड़ा, और पूरे समय उसी के साथ नाचता रहा। उसने किसी को भी नहीं देखा।

पहले की तरह वह फिर घर पहुँच गई और जब सारे नौकर आये तो वह अपना लबादा पहने सो रही थी।

''अरे तुम्हें कल रात को वहाँ नाच कार्यक्रम में होना चाहिए था।'' उन लोगों ने सुबह केप से कहा। वह सुन्दर औरत वहाँ फिर आयी थी और तुम्हारे मालिक का बेटा किसी के साथ भी नहीं नाचा होगा, उसे छोड़कर।

यही घटना तीसरी शामको भी घटित हुई। यह अंतिम दिन था और मालिक बेटा जानना चाहता था कि केप का नाम क्या है और वह कहाँ रहती है, उसने उससे कुछ नहीं कहा बस धीरे से मुस्कार दी। तब उस मालिक के बेटे ने केप को एक अंगूठी दी और कहा कि, यदि वह फिर नहीं देखेगा तो वह मर जायेगा।

दूसरे दिन से मालिक का बेटा रोज एक सप्ताह तक अपनी सुन्दर नाच-जोड़ी-दार को देखना चाहता था, लेकिन नहीं देख पाया। किसी ने उसको आते और जाते नहीं देखा तथा न ही किसी को उसका नाम पता था। इससे मालिक का बेटा बहुत दुःखी हुआ और चारपायी पकड़ ली।

''कुछ पौष्टिक खीर राजकुमार के लिए बनाओ, वह, बहुत खराब हालत में है।'' उन लोगों ने रसोईये से कहा।

रसोईया काम करने के लिए तैयारी कर रही थी कि केप वहाँ आयी और कहा कि ''लाओ मुझे बनाने दो। मेरी दादी ने एक तरीका बताया है जिससे खीर बनकर रोगी को खिलाने से सभी रोग समाप्त हो जाते है।''

पहले तो वह औरत नहीं मानी, फिर कुछ सोचकर केप को खीर बनाने दी। केप ने खीर बनाकर एक कटोरे में डाला और उसे रोगी राजकुमार तक भेजने से पहले उसमें वहीं अंगूठी डाल दी जो मालिक के बेटे ने दिया था। लड़के ने खीर पीली तो देखा कि कटोरे में वहीं अंगूठी है। उसने रसोइये से पूछा ''खीर किसने बनाई है?''

अब उसे मालूम नहीं था कि क्या गलती हुई है। उसने सहमते हुए पूछा, ''क्या हुआ छोटे मालिक, मैंने बनाई है।''

''नहीं तुमने नहीं बनाया।'' जोर से छोटे मालिक ने कहा, ''सही बताओ तुम्हें कुछ नहीं होगा।''

''केपओ रशेस ने बनाया। वह बनाना चाहती थी तो मैं क्या करती।'' रसोईये ने कहा।

जब केप उसके पास आयी तो उसने पूछा, ''तुम्हें यह अंगूठी कब और कहाँ मिली?''

''उसके पास से जिसने मुझे दिया'' केप ने उत्तर दिया।

''तुम कौन हो?'' लड़के ने पूछा।

''मैं तुम्हें अभी बताती हूँ।'' उसने कहा और बाहर चली गई। जब वह वापस आयी तो वह सुन्दर कपड़े पहनी थी और साफ-सुथरी थी। तब राजकुमार को पता चल गया कि वह कौन है। वह खाट से उठा और घोषणा कर दी कि वह केप से ही शादी करेगा, किसी और से नहीं।

केपओ रशेस के पिता को भी शादी में बुलाया गया था। अभी तक किसी को नहीं मालूम था कि वह कौन है।

लेकिन शादी से थोड़ी देर पहले वह रसोईए के पास गई और कहा कि ''मैं चाहती हूँ कि आप सारा खाना बिना नमक के बनाए।''

''ओह, लेकिन इससे कुछ स्वाद नहीं रहेगा।'' रसोइये ने आश्चर्य से कहा।

''इसकी चिन्ता मत करो। बस वहीं करो जो मैंने कहा है।'' केप ने उत्तर दिया।

शादी का समय आ गया और उनकी शादी

हो गई। मेहमान खाना खाने के लिए गए परन्तु कुछ भी नहीं खा पाए, क्योंकि यह स्वादिष्ट नहीं था। केप अपने पिता को घूँघट के पीछे से देख रही थी। उसने एक-के-बाद एक सारे खाने चखे और बाद में फूट-फूटकर रोने लगा।

''क्या बात है?'' मालिक के बेटे ने पूछा। क्या खाने की वजह से आप इतना परेशान हो गए?''

'आह' उसने कहा। ''मेरी एक बेटी थी। मैंने एक बार उससे पूछा, वह मुझे कितना प्यार करती है, तो उसने कहा जितना कि भोजन नमक को और मैं। मैं बेवकूफ़ था, इसी बात के लिए उसे घर से निकाल दिया। क्योंकि मुझे उसके कहने का उद्देश्य समझ में नहीं आया। अब समझ में आया कि वह मुझसे कितना प्यार करती थी। जो कुछ मैंने किया, शायद उससे वह मर गई होगी।'' और वह सिसकने लगा।

तब केप ने अपना घूँघट उठाया और कहा, ''नहीं, पिताजी ! मैं यहाँ हूँ।'' और पिता से जाकर लिपट गयी।

इस प्रकार सब कुछ ठीक हो गया और उसके बाद वे आराम से रहने लगे। - *'उमा रामन''*

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

१५ अगस्त प्रतिवर्ष देश की स्वतंत्रता की याद दिलाता है। जिसके लिए न जाने कितने लोगों ने संघर्ष किया और अन्ततः ५४ वर्ष पहले भारत की स्वतंत्रता की घोषणा हुई। इस महीने की प्रश्नोत्तरी भी आपको कुछ मुख्य घटनाओं का अध्ययन करने के लिए उत्साहित करेगी, जो आज से १०० वर्ष पूर्व घटी और जिसमें कितने लोग कुर्बान हो गए।

१. १८५७ के गदर के समय किस भारतीय रेजीमेंट ने सबसे पहले अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की थी?

२. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना किसने की थी?

३. प्रथम कांग्रेस सत्र में पहली बार किसने कहाँ और कब पहली बार भाषण दिया था?

४. यू.एस.ए. में गदर पार्टी किसने बनाई?

५. कांग्रेस की देख-रेख में ३००० लोगों के ऊपर पुलिस ने हमला किया। जिससे शहर में दंगा फैल गया और पुलिस स्टेशन को आग लगा दी। यह घटना कब घटी? चौरीचौरा कहाँ है?

६. किस तारीख को जलियाँनवाला काण्ड हुआ?

७. युवाओं में उत्साह तथा देशभक्ति भावना भरने के लिए किसने १८९५ में शिवाजी उत्सव मनाया?

८. 'मेरा देश' और 'मेरे लोग' कहते हुए गाँधीजी कब वापस आए?

९. १९१५ में बलासूर में किस क्रांतिकारी ने पुलिस से लड़ते हुए अपनी जान कुर्बान कर दी?

१०. ईंग्लैण्ड में भारतीय शासक और अंग्रेज शासकों की तीन बैठकें हुई थीं। दो लोगों ने सारी बैठक में भाग लिया। वे लोग कौन थे?

११. 'इनक्लाब जिन्दाबाद' का नारा किसने आरम्भ किया?

१२. 'भारतीय राष्ट्रीय सेना' का आरम्भ किसने किया?

(उत्तर अगले माह)

जुलाई माह की प्रश्नोत्तरी का उत्तर

१. १८७२।

२. २.२ प्रतिशत।

३. मिजोरम।

४. ३०-३९ वर्ष।

५. बिहार।

६. ३६.२ प्रतिशत।

७. मुसलमान और सिक्ख।

८. दिल्ली।

९. तमिलनाडु।

१०. नागालैण्ड।

११. महाराष्ट्र।

१२. आन्ध्र प्रदेश और उत्तर प्रदेश।
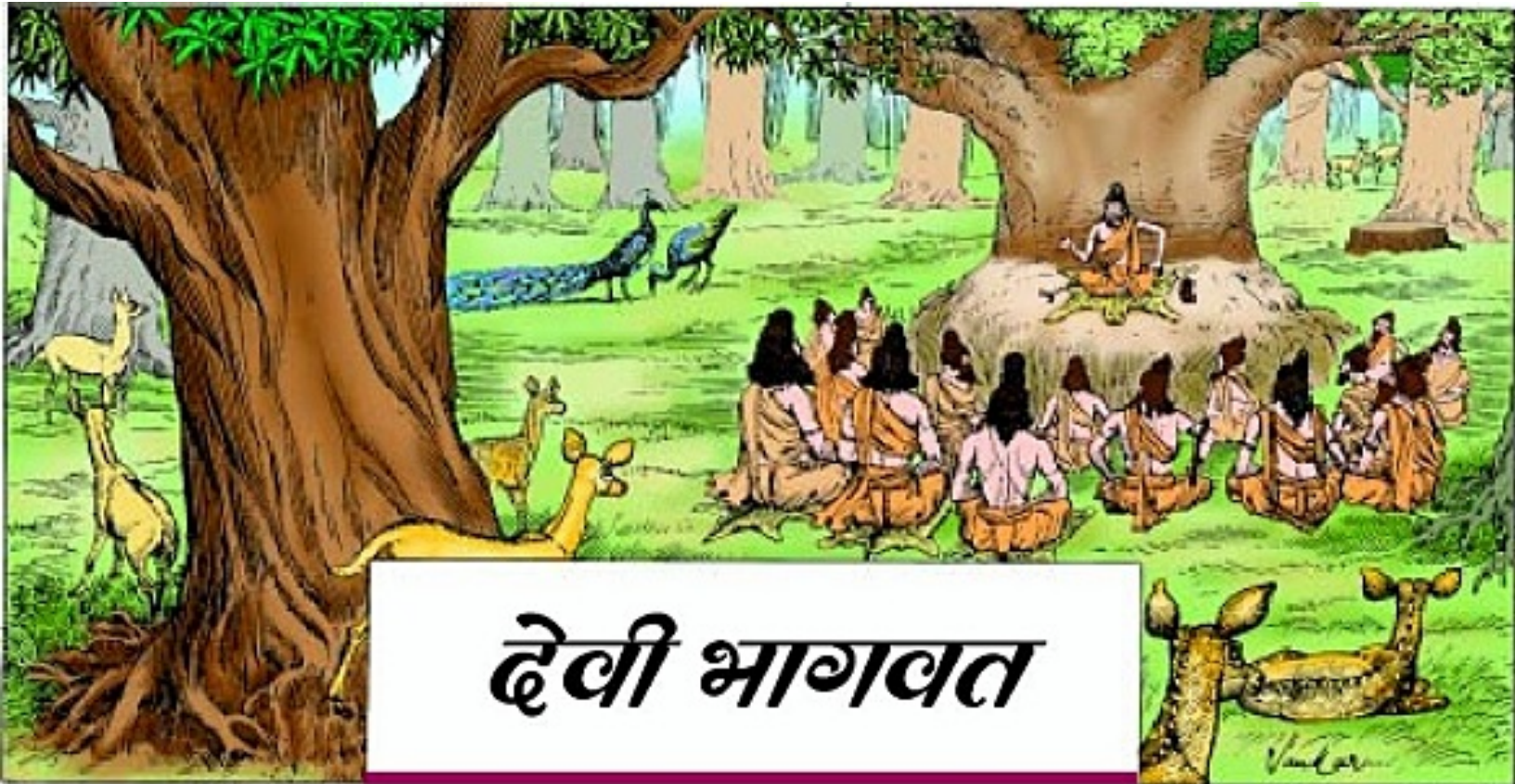
देवी भागवत

नैमिशारण्य में निवास करनेवाले मुनियों को सूत मुनि ने व्यास महर्षि के द्वारा सुने अनेक पुराण सुनाये। किसी संदर्भ में सूत ने शौनक आदि मुनियों के सामने देवी भागवत नामक पुराण का उल्लेख किया था। एक दिन शौनक ने सूत को यह बात याद दिलाई और वही भागवत सुनाने का अनुरोध किया। सूत ने उन मुनियों को देवी भागवत पुराण कह सुनाया :

सूत ने सर्व प्रथम आदि शक्ति के बारे में यों कहा : देवी एक महान शक्ति है। वही विद्या है, समस्त लोक उनके आश्रय में हैं। सृष्टि, स्थिति और लय का कारणभूत वास्तव में आदि शक्ति ही है। उनकी प्रेरणा से त्रिमूर्ति अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। ब्रह्मा विष्णु की नाभि से उत्पन्न हुए हैं। विष्णु का आधार आदिशेष हैं। उस जल का आधार महा शक्ति लोक माता है। ऐसी देवी से संबन्धित कथा ही देवी भागवत है।''

सूत मुनि के मुँह से देवी भागवत की कथा सुनने का कुतूहल रखनेवाले मुनियों की तरफ़ से शौनक ने सूत मुनि से पूछा-''एक समय ब्रह्मा ने हमें एक चक्र प्रदान किया और कहा था कि उसकी नेमि जिस प्रदेश में टूट जाएगी, वह प्रदेश अत्यंत पवित्र है। वहाँ पर कलि का प्रवेश न होगा। उस चक्र की नेमि या धुरी यहीं पर टूट गई थी। इसलिए इस प्रदेश का नाम नैमिश पड़ा। हम लोग यहीं पर रह गये। पुनः कृत युग के आगमन तक यहीं रहकर कलि के भय से मुक्त रहेंगे। यहाँ पर हमें पुण्य गोष्ठी के अतिरिक्त अन्य काम नहीं हैं। इसलिए आप हमें पुण्यप्रद देवी भागवत पुराण सुनाइये।''

इसके बाद सूत मुनि ने यों कहा :

''महामुनि व्यास ने मुझे देवी भागवत सुनाया, उसी रूप में मैं आप लोगों को वह पुराण सुनाता हूँ। अब तक सत्ताईस द्वापर बीत गये हैं और अट्ठाईसवाँ द्वापर चल रहा है। प्रत्येक द्वापर में एक व्यास का जन्म हुआ है। वेदों का विभाजन करके, पुराणों की रचना करनेवाले सात्यवतेय नामक व्यास (सत्यवती का पुत्र) मेरे गुरुदेव हैं। वे अपने पुत्र शुक को यह

पुत्रों को जन्म दे सकते हैं। पुत्र बड़े हो बिवाह करे तो प्यारी बहू को देख प्रसन्न हो सकते हैं। पुत्रों के होने से कितने ही लाभ हैं ! वे हमारी वृद्धावस्था में श्रद्धा के साथ हमारी सेवा करेंगे। धन कमाकर ला देंगे। हमारे मरने पर सिर के नीचे आग देकर हमें उत्तम लोकों की प्राप्ति के हेतु पिंड प्रदान वगैरह करते हैं। इसलिए मानव के लिए पुत्रों से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

यों विचार कर व्यास मुनि पुत्र पाने के विचार से तपस्या करने कांचनाद्रि पहुँचे और सोचने लगे कि किस देवता की आराधना करने से उनकी इच्छा की पूर्ति जल्दी हो सकती है। उस समय वहाँ पर नारद पहुँचे। उन्हें देखते ही व्यास ने प्रणाम करके पूछा- ''भगवान ! आप उचित समय पर आ गये। संभवतः मेरी कामना की पूर्ति करने के लिए ही पधारे होंगे।''

इस पर नारद ने कहा-''आप सर्वज्ञ हैं। आप के लिए किसी दूसरे की सहायता की आवश्यकता ही क्या है? फिर भी आप की कोई कामना हो तो बता दीजिए!''

''सुना है कि पुत्र विहीन व्यक्ति को परलोक प्राप्त नहीं होता। महर्षि ! बताइये, किस देवता की प्रार्थना करने पर वे मुझे पुत्र प्रदान करेंगे?'' व्यास ने पूछा।

इस पर नारद ने यों समझाया-''एक समय मेरे पिता ब्रह्मा के मन में भी यही संदेह पैदा हुआ। वे विष्णु लोक में पहुँचे। विष्णु को देख पूछा-''मैं आप ही को सर्वोत्तम मानता हूँ। आप से भी कोई महान व्यक्ति हो तो बता दीजिए।''

विष्णु ने कहा था-''लोग सोचा करते हैं कि आप सृष्टिकर्ता हैं, मैं स्थितिकारक हूँ और शिवजी लयकारक हैं। लेकिन यह तो भारी भूल है। बुद्धिमान

देवी भागवत सुना रहे थे, उस समय मैंने अत्यंत भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक उसे हृदयंगम कर लिया। बुजुर्ग कहा करते हैं न - '' 'दामाद के साथ खाओ, पुत्र के साथ पढ़ो।' इसी प्रकार यह देवी भागवत सुनकर शुकमुनि तर गये। वास्तव में जिन लोगों ने यह पुराण सुना है, वे कष्टों से दूर हो जाते हैं।''

इस पर मुनियों ने पूछा-''शुक मुनि व्यास महर्षि के कैसे पुत्र हुए? कहा जाता है कि उनका जन्म अरणि में हुआ है!'' इस पर सूत ने मुनियों को शुक का जन्म-वृत्तांत यों सुनाया :

एक समय व्यास महर्षि सरस्वती नदी के तट पर तपस्या कर रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ पक्षी दंपतियों के रूप में जीवन बिताते हुए बच्चे दे रहे हैं और उनके मुँह में आहार देकर उनको खाते देख वे परमानंदित हो रहे हैं। इसे देख व्यास ने सोचा कि उन्हें भी संतान पैदा हो जाय तो क्या ही अच्छा हो! शादी करने पर पत्नी के साथ सुख भोग सकते हैं।

लोग जानते हैं कि तेजोप्रधान 'आदि शक्ति' ही सृष्टि करती हैं। हम अगर सृष्टि, स्थिति और प्रलयकारक हैं तो इसका कारण है- आपको रज, मुझे सत्व और शिबजी को तमस सहायकारी हो रहे हैं। बरना हमारा मूल्य ही क्या है? यदि मैं शेषतल्प पर शयन करता हूँ, और घमण्डी राक्षसों का वध करता हूँ तो यह सब उस शक्ति की कृपा के कारण ही है न? क्या बहुत समय पूर्व मधु और कैटभ नामक दानवों के साथ पाँच हज़ार वर्षों तक लड़कर अंत में उसी शक्ति की सहायता से ही मैंने विजय नहीं पाई? मैं कभी अपने को स्वतंत्र व्यक्ति नहीं मानता। एक बार धनुष की डोरी के द्वारा मेरा सर कट गया तो आप ने देव शिल्पी के हाथ एक घोड़े का सिर चिपकवा दिया था, इस प्रकार मैं क्या हयग्रीव नहीं बना? इसलिए मैं शक्ति के अधीन हूँ। मैं यह नहीं कह सकता कि समस्त लोकों में भी शक्ति से बढ़कर कोई चीज़ है !''

यों समझाकर नारद ने व्यास मुनि से कहा- ''इसलिए आप आदि शक्ति की आराधना करेंगे तो आप की इच्छा की पूर्ति होगी।''

इस पर व्यास महर्षि ने लो कमाता के प्रति तपस्या की।

इस पर मुनियों ने सूत से पूछा-''बिष्णु का सर कैसे कट गया? उनके धड़ पर घोड़े का सर कैसे चिपकाया गया? इसे विस्तृत रूप में सुनाइये।''

हयग्रीवावतार

प्राचीन काल में विष्णु ने राक्षसों के साथ दस हज़ार वर्ष तक युद्ध किया, आखिर थककर चढ़ायी गयी प्रत्यंचा की डोरी पर चिबुक टिकाकर सोने लगे। उस समय देवताओं ने यज्ञ करने का संकल्प किया और उनकी खोज में आ पहुँचे। बिष्णु को सोते देख वे पशोपेश में पड़ गये कि आखिर क्या किया जाय? इस पर शिबजी ने ब्रह्मा से कहा-''आप एक कीड़े की सृष्टि करके उसके द्वारा बिष्णु के धनुष की प्रत्यंचा को कटवा दीजिए। प्रत्यंचा के कटते ही धनुष का छोर ऊपर उठेगा। तब बिष्णु जाग पड़ेंगे। इस प्रकार यज्ञ संपन्न हो सकता है।''

इस पर ब्रह्मा ने कीड़े की सृष्टि करके प्रत्यंचा की डोरी को काटने का आदेश दिया।

तब कीड़ा बोला-''महात्मा ! मैं यह काम कैसे करूँ? यह तो महान पाप है न? माता और बच्चों को अलग करना, पति-पत्नी में विरह पैदा करना, निद्रा भंग करना ये सब ब्रह्महत्या जैसे महान पाप हैं। क्या आप मुझे यह पाप करने का आदेश देते हैं?''

''तुम चिंता न करो ! यज्ञ में अग्नि की आहुति न करनेबाले सारे पदार्थ मैं तुम्हें दूँगा।'' ब्रह्मा ने कीड़े को समझाया।

इस पर कीड़े ने प्रसन्न होकर प्रत्यंचा की डोरी

काट दी। उस बक्त भारी आवाज़ हुई। इस पर धरती कांप उठी। प्रत्यंचा का छोर तन गया जिससे बिष्णु का सर कटकर ऊपर उड़ गया। इसे देख सारे देवता घबरा गये। उनकी समझ में न आया कि क्या करें? तब सब लोग बिलाप करने लगे-"भगबान! आप तो सर्वेश्वर हैं। समस्त लोकों क ा पालन करनेबाले हैं। आपका यह हाल कैसे हो गया है? सभी राक्षस जो कार्य नहीं कर पाये, यह काम किसने किया है? आप तो माया से भी अतीत रहते हैं! क्या माया का इस प्रकार करना संभव है?"

इस पर देबगुरु बृहस्पति ने उन्हें समझाते हुए कहा-"रोते बैठे रहने से काम कैसे चलेगा? जो हुआ सो हो गया। इसका कोई उपाय सोचिये।"

तब इंद्र ने कहा-"समस्त देबताओं के देखते-देखते भगबान बिष्णु का सर कटकर उड़ गया है। ऐसी हालत में हमारे प्रयत्नों के द्वारा क्या हो सकता है? भगबान की कृपा से ही कुछ संभव है!"

इस पर ब्रह्मा ने देबताओं को समझाया-"सब कार्यों के लिए जगदीश्वरी का अनुग्रह चाहिए। वे ही सृष्टि, स्थिति और लयकारिणी हैं। इसलिए आप सब उस आदि शक्ति की प्रार्थना कीजिए।"

देबताओं ने आदि शक्ति की प्रार्थना की। उन पर कृपा करके देबी प्रत्यक्ष हो गईं।

देबी के दर्शन कर देबताओं ने पूछा-"माता! बिष्णु भगबान का यह हाल क्यों हो गया है? उनका सर क्या हो गया है?"

देबी ने उनको समझाया-"बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। एक दिन बिष्णु ने शयनागार में लक्ष्मी को देख हँस दिया। तब लक्ष्मी घबरा गईं। बिष्णु भगबान उनका चेहरा देख क्यों हँस पड़े? क्या उनका मुँह ऐसा भद्दा है? या उससे भी अधिक रूपबती नारी को देख बे उस पर मोहित हो गये हैं? यों बिचार कर लक्ष्मी ने सोचा कि सौत के झगड़े मोल लेने की अपेक्षा पति का मर जाना कहीं उत्तम है? यों सोचकर लक्ष्मी ने बिष्णु को श्राप दिया कि उनके पति का सिर कटकर समुद्र में गिर जाय। उसी श्राप के कारण बिष्णु का यह हाल हो गया है। साथ ही हयग्रीब नामक राक्षस ने मेरे प्रति एक हज़ार बर्ष पर्यंत तपस्या की। मैंने प्रत्यक्ष होकर उससे बर माँगने को कहा। तब उसने पूछा कि किसी के भी द्वारा उसकी मौत न हो। मैंने समझाया कि जो भी प्राणी जन्म लेता है, उसे मृत्यु अनिबार्य है। इसलिए मैंने दूसरा बर माँगने को कहा। इसलिए उसने यह बर माँगा कि बह हयग्रीब है; अतः हयग्रीब के द्वारा ही उसकी मृत्यु हो। मैंने यह बर उसे दे दिया। बह इस बक्त समस्त लोकों को सता रहा है। इन तीनों लोकों में उसे मारने की शक्ति रखनेबाला कोई नहीं है। इसलिए तुम लोग एक घोड़े

का सर लाकर विष्णु के धड़ से लगाकर हयग्रीव की सृष्टि कर दो। ऐसा करने पर ये विष्णु हयग्रीव उस राक्षस हयग्रीव का वध कर बैठेंगे और तुम लोगों की कामना की पूर्ति भी होगी।''

यों समझाकर आदि शक्ति अदृश्य हो गई। तब देवताओं ने देवशिल्पी को बुलवाकर आदेश दिया कि घोड़े का सर लाक र विष्णु के धड़ से चिपका दे। देवशिल्पी ने ऐसा ही किया। फिर क्या था, विष्णु ने हयग्रीव के रूप में हयग्रीव राक्षस का वध करके लोगों को आनंद प्रदान किया। इसके उपरांत मुनियों ने सूत से प्रार्थना की कि उन्हें मधु और कैटभ का वृत्तांत सुनावे। तब सूत ने उन राक्षसों का वृत्तांत यों सुनाया :

क्षीर सागर में शेष शैय्या पर जब विष्णु सो रहे थे तब उनके कानों से दो राक्षस पैदा हुए। वे पानी में तैरते अपने जन्म के कारण पर आश्चर्य चकित हुए। तब कैटभ ने मधु से कहा-''इस महा समुद्र और हमारे लिए भी कोई आधार ज़रूर होगा।''

उसके मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि आकाश से यह वाणी सुनाई दी।

मधु और कैटभ उस वाणी का जाप करने लगे। तभी लगा कि आसमान में कोई बिजली कौंध गई हो! राक्षसों ने उसे देख सोचा कि वह आदि शक्ति का तेज है। तब उन्हें जो ध्वनि सुनाई दी, उसी को मंत्र मानकर एक हज़ार वर्ष पर्यंत तप किया। उस तपस्या पर प्रसन्न हो देवी ने उससे वर माँगने को कहा। उन लोगों ने स्वेच्छा मृत्यु की कामना की। देवी ने उन्हें यह वर दे दिया।

इसके बाद वे जल में संचार करते रहे। एक स्थान पर ब्रह्मा को देख उन्हें युद्ध के लिए ललकारा। कहा-''आप हमारे साथ युद्ध कीजिए। वरना पद्मासन को छोड़ कहीं भाग जाइये।''

ब्रह्मा डर गये और योग समाधि में स्थित विष्णु से प्रार्थना की-''महात्मा ! जाग जाइये ! दो राक्षस मेरा वध करना चाहते हैं। मेरी रक्षा कीजिए।''

विष्णु योग निद्रा से जागे नहीं। इस पर ब्रह्मा ने आदि शक्ति योग निद्रा से ही प्रार्थना की-''जगन्माता! इन राक्षसों का वध करने के लिए आप विष्णु को जगाइये या आप ही मेरी रक्षा कीजिए।'' फिर क्या था, उसी वक्त योग निद्रा विष्णु को छोड़कर चली गई। विष्णु को निद्रा से जागते देख ब्रह्मा परमानंदित हुए।

कृष्णभूपति

(पिछले अंक का शेष भाग...)

''प्रभु, जैसे आपने सोचा, मैं क्षत्रिय कन्या हूँ। यही नहीं, मैं आपके मामा कुशद्वीप महाराज चंपक वर्मा के ससुराल के परिवार की एक सदस्या भी हूँ। आपके मामा का विवाह जब संपन्न हुआ तब से मेरे पिता गोपालसेन और आपके मामा में गाढ़ी मित्रता स्थापित हुई। उन्होंने चाहा कि मेरे पिता उनके यहाँ आयें और वहीं रहें। तब से लेकर हमारा परिवार कुशद्वीप में रहा और राजकुटुंब की सेवा में समर्पित हो गया।

मेरा जन्म भी यहीं हुआ। उसमें आपके मामाजी की बेटी ज्योत्सना से केवल एक महीना छोटी हूँ। जिस प्रकार मेरे पिता और आपके मामाजी मित्र थे, उसी प्रकार हम दोनों भी मित्र हैं। बाल्यकाल से ही हम दोनों मिल-जुलकर रहती थीं।

आपके पिताजी की मौत की ख़बर पाते ही महाराज तुरंत आपके यहाँ आ गये। हम लोग बड़ी ही बेचैनी से उनका इंतज़ार कर रहे थे। परंतु उन्होंने मूल्यवंत को राजप्रतिनिधि के स्थान पर नियुक्त किया। उसकी नियुक्ति पर हमें बड़ी निराशा हुई। उस समय मेरे पिताजी महाराज के अंतरंग सलाहकार थे।

मूलावंत कुछ समय तक विश्वासपात्र ही रहा। क्रमशः उसके स्वभाव में परिवर्तन होते आये। उसके इस बदलते स्वभाव को मेरे पिताजी जान

गये। मेरे पिताजी यह प्रकट होने देना नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि उसकी दुष्टता के सबूत पहले इकट्ठे कर लिये जाएँ और फिर आपके पिताजी को सूचित किया जाए। उन्होंने इस विषय में पर्याप्त सावधानी बरती। जब उन्होंने सारे सबूत इकट्ठे कर लिये तब उन्होंने सबूतों सहित एक पत्र आपके पिताजी को लिखा। उस पत्र को उन्होंने कबूतर के द्वारा मलयद्वीप पहुँचना चाहा। कबूतर द्वारा समाचार भेजने का यह उत्तरदायित्व एक अधिकारी के हाथ में था। दुर्भाग्यवश मेरे पिताजी को यह मालूम नहीं था कि वह अधिकारी मूल्यमंत का ही आदमी है। वह पत्र महाराज चंदनवर्मा के बदले मूल्यवंत के हाथ में आ गया। उसने मेरे पिताजी को बुलवाया और वहीं का वहीं उन्हें मरवा डाला। उनके शव को गाड़ दिया, जिससे किसी को इसका पता ही न चले।

फिर मूल्यमंत ने मुझे और मेरी माता को ख़बर भिजवायी कि एक अत्यंत आवश्यक काम पर मेरे पिताजी मलयद्वीप भेजे गये हैं और उनके लौटने में विलंब होगा। पहले तो इसे हमने सच मान लिया। किन्तु पहले से मुझे संदेह खाये जा रहा था। मुझे लग रहा था कि अवश्य ही दाल में काला है। परंतु हम उस स्थिति में कर भी क्या सकती थीं।

परंतु कुछ समय के बाद मूल्यमंत की दुष्टता हद पार करने लगी। एक-एक करके उसके पाप-कर्मों का पर्दाफाश होने लगा। जगह-जगह पर उसके स्वार्थ-भरित दुष्कर्मों को लेकर कानाफूसी होने लगी। लोग खुल्लमखुल्ला यह बोलने से डरते

थे कि मूल्यवंत स्वयं राजा बनने के ख्वाब देख रहा है और इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार है। आपके मामाजी को बहुत चाहनेवाले दो-तीन अधिकारियों ने डटकर उसका विरोध किया। उसकी करतूतों पर उंगली उठायी। पर उन बेचारों की भी वही हालत हुई, जो मेरे पिताजी की हुई। भला पाप कब तक और कहाँ तक छिपाया जा सकता है। धीरे-धीरे हमें भी मालूम हुआ कि हमारे पिताजी के साथ क्या हुआ? विश्वासपात्र आदमियों के द्वारा पिताजी की मृत्यु के समाचार के दृढ़ीकरण के बाद मेरी माताजी बीमार पड़ गयीं और चंद दिनों में मर भी गयीं।

अब हमारे परिवार में मैं अकेली ही रह गयी। मेरा अपना कोई नहीं था। मूल्यवंत के विरुद्ध मेरी नस-नस में प्रतीकार की ज्वाला प्रज्वलित होने

राज्य उन्हें नहीं लौटायेगा और दोनों में युद्ध छिड़ेगा। मैं निर्णय कर चुकी थी कि महाराज के पक्ष में रहकर लड़ूँगी और किसी न किसी प्रकार मूल्यवंत का प्राण हर लूँगी। मुझे पूरा भरोसा था कि एक दिन यह सच निकलेगा। इसी आशा में मैं एक सहेली के घर में छिपकर रहने लगी।

जैसे मैंने सोचा महाराज चंदनबर्मा लंबे अर्से के बाद राजधानी लौटे। किन्तु लड़ाई की कोई ज़रूरत ही नहीं पड़ी क्योंकि मूल्यवंत की कृतघ्नता व विश्वासघात ने महाराज को हिला दिया, उन्हें बड़ा धक्का लगा और दिल का दौरा पड़ने से वहीं का वहीं स्वर्ग सिधारे। रक्त की एक बूंद भी बहाये बिना कुशद्वीप का सिंहासन मूल्यवंत के हस्तगत हो गया। महारानी की समझ में नहीं आया कि कौन आत्मीय है और कौन द्रोही। वे अपनी पुत्री ज्योत्सना को लेकर भाग गयीं और आपके देश में पहुँची।

मूल्यवंत और उसके साथियों ने ताड़ लिया कि महारानी मलयद्वीप ही पहुँची होगीं। मेरी ही आँखों के सामने घटती हुई इन घटनाओं ने मेरी आशाओं पर पानी फेर दिया।

इन परिस्थितियों में पहले मुझे यह नहीं सूझा कि मैं आगे क्या करूँ। उन दिनों मैं आपके शौर्य-पराक्रम की गाथाएँ सुनती आ रही थी। मुझे लगा कि आप ही मेरा एकामात्र आधार हैं, जिनके द्वारा अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सकती हूँ। मैंने अनुमान लगाया कि आप चुप बैठनेवाले आदमियों में से नहीं हैं और आप अवश्य अपने मामा के हत्यारे को सज़ा देकर ही रहेंगे और वह सज़ा होगी, प्राण-

लगी। मैं अपनी विवशता जानती थी। मुझे मालूम था कि अकेले मैं कुछ कर नहीं सकूँगी। मैं घर से भागी और इस जंगल में प्रवेश किया।

इस जंगल में भील जाति के लोग रहते हैं। वे युद्ध-विद्याओं में प्रवीण होते हैं। शास्त्रीय युद्ध-विद्याओं में मैं प्रवीण तो थी ही। छुटपन से ही मैं अनायास ही तलवार तेज़ी से घुमाती और चलाती थी। महाराज चंदनवर्मा मेरा कौशल देखकर अचंभे में आ जाते थे और मेरी तारीफ़ के पुल बांधते थे। मैंने पुरुष वेष धारण करके भील जाति की लड़ाई के तरीक़े भी सीखे। वहाँ से कुशद्वीप की राजधानी लौटी और महाराज चंदनबर्मा के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी।

मेरा अनुमान था कि महाराज चंदनबर्मा जब लौटेंगे तब मूल्यवंत किसी भी हालत में उनका

दंड। ऐसी स्थिति में भला क्या कोई क्षत्रिय हाथ पर हाथ-धरे चुप बैठा रह सकता है? इसी उम्मीद को लेकर मैं इस जंगल में आ गयी, क्योंकि कुशद्वीप पहुँचना हो तो इसी मार्ग से होते हुए आना पड़ेगा। मैं जानती थी कि निकट भविष्य में आप यहाँ आयेंगे और मुझे इसकी उम्मीद भी थी कि मैं आपकी सेना में भर्ती हो जाऊँगी।

अपने प्रतीकार की ज्वाला को बुझाने के लिए भगवान से प्रार्थना करती हुई बड़ी ही बेचैनी से आपका इंतज़ार करती रही।

शायद वे कल्वार द्वीप पर विजय प्राप्त करके असंख्य सेना के साथ कुशद्वीप पर आक्रमण करने ही वाले हैं, यह जानकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। भगवान की कृपा से मैंने जो भी सोचा, वही हुआ। इसके बाद क्या हुआ, आपसे कुछ छिपा नहीं है। मैं अकेली जो काम नहीं कर सकती, वह आपकी सहायता से कर पाऊँगी। पहले से ही आपने मेरा आदर किया, मेरा ख्याल रखा, इसके लिए आपको मेरे हार्दिक धन्यवाद।'' यों कलाकौमुदी ने अपनी कहानी पूरी की।

कृष्णभूपति ने उसकी कहानी बड़े ही ध्यान से सुनी। फिर कहा ''जाने या अनजाने में तुम्हारे आशय की पूर्ति के लिए मैंने तुम्हारी भरसक मदद की। क्या इतनी बड़ी सहायता पहुँचाने के एवज़ में धन्यवाद देना मात्र काफ़ी है?''

राजा की बातों से घबरायी कौमुदी ने कहा, ''मानती हूँ, धन्यवाद समर्पण मात्र से ऋण चुक नहीं जायेगा। आपने मेरी जो सहायता की, मेरा

आदर-सम्मान किया, उसके लिए मैं आजन्म कृतज्ञ रहूँगी। जो भी काम आप करने के लिए कहेंगे, करने के लिए तैयार हूँ।''

कृष्णभूपति ने मंदहास करते हुए कहा, ''मैं कृष्णभूपति हूँ। कला और युद्ध में भी असमान प्रज्ञाशाली तुम जैसी साक्षात सत्यभामा को क्या आज्ञा देनी है, तुम्हीं सुझाना।''

इन बातों के पीछे छिपे गूढ़ार्थ को समझ गयी कौमुदी और मुस्कुराती हुई वह कोमल व मधुर स्वर में बोली, ''जैसी आपकी इच्छा। आपकी जो भी आज्ञा होगी, पालन करूँगी।''

''कौमुदी, तुम मुझे बहुत अच्छी लगी हो। मैं तुम्हें अपनी रानी बनाना चाहता हूँ। किन्तु इसमें एक अड़चन है। मेरी माँ की इच्छा है कि मेरे मामाजी की बेटी ज्योत्सना मेरी पत्नी बने। क्योंकि

तुम्हें मालूम है कि मैं आज जो भी हूँ, वह मेरे मामाजी की बदौलत हूँ। उन्हीं ने मुझे इस योग्य बनाया। इस सत्य को दृष्टि में रखते हुए मुझे माँ की इच्छा अनुचित भी नहीं लगती। मैं माँ को वचन भी दे चुका हूँ कि अवश्य ही उनकी माँग पूरी करूँगा। इसलिए अगर इसी क्षण मैं तुमसे गांधर्व विवाह कर भी लूँगा तो भी तुम पटरानी नहीं बन सकती। मेरी इष्टदेवी बनकर ही रहोगी। अगर तुम्हें यह स्वीकार हो तो इसी क्षण हम दंपति बन सकते हैं।''

कला कौमुदी राजा की बातों से निरुत्साहित नहीं हुई। उसने प्रेम-भरे स्वर में कहा, ''न ही पटरानी बनने की मेरी इच्छा है, न ही सिंहासन का आधा भाग मुझे चाहिए। प्रभु, आपके हृदय में मुझे शाश्वत स्थान मिल जाए, वही अपना अपार भाग्य मानूँगी।''

अति आनंदित कृष्णभूपति ने उसी क्षण गंधर्व विवाह कर लिया। किन्तु उनके विवाह का समाचार गुप्त ही रखा गया।

मलयद्वीप लौटते हुए कृष्णभूपति अपने साथ कलाकौमुदी को भी ले आया। उसका परिचय कराते हुए अपनी माँ से इतना ही कहा कि वह गोपालसेन की पुत्री है। उस समय वहाँ उपस्थित ज्योत्सना और उसकी माता ने कौमुदी से कुशल-मंगल पूछा।

दो-तीन दिनों के बाद भूपति ने कौमुदी से विवाह करने की अपनी इच्छा माता से बतायी।

जिस दिन उसके बेटे ने कौमुदी का परिचय कराया, उसी क्षण सुनंदा देवी के मन में संशय जगा कि दाल में काला कुछ ज़रूर है। वह थोड़ी देर तक चुप रही। फिर उसने कहा, ''पुत्र, तुम्हारे निर्णय से मैं संतृप्त हूँ किन्तु ज्योत्सना का क्या होगा? युद्ध से लौटने के बाद उनसे तुमने क्या उनके कुशद्वीप के बारे में बात की?''

''हाँ, बात की। मैंने देखा कि उसके मुख पर आनंद की कोई छाया भी नहीं है। मैंने इसका कारण जानने की बहुत कोशिश की, पर जान न पाया। आज उसी के बारे में आपसे पूछना चाहता हूँ और जानना चाहता हूँ कि उसकी इस उदासी का क्या कारण हो सकता है।'' कृष्ण भूपति ने कहा।

सुनंदादेवी ने एक-दो क्षणों तक अपने पुत्र के मुख को ध्यान से देखा और कहा , ''कृष्ण, न ही ज्योत्सना से विवाह रचाने का प्रस्ताव तुमने रखा, न ही उसने। वह प्रस्ताव तो मेरे भाई

चंदनवर्मा ने रखा था। मुझे वह प्रस्ताव सभी दृष्टिकोणों से सही ही लगा। एक बात पूछती हूँ, साफ़-साफ़ कहो ! मुझे मालूम है कि अपनी माता से झूठ कहने का साहस तुम नहीं कहोगे। क्या कभी तुम्हारे मन में ज्योत्सना से विवाह करने की इच्छा जगी या उसे चाहा?''

माँ के इस प्रश्न से स्तंभित भूपति ने रुक कहा, ''माँ, मेरे मन में कभी भी ऐसी इच्छा नहीं जगी। आपने तो उससे विवाह करने का प्रस्ताव पेश किया। माँ की आज्ञा मानकर मैंने 'हाँ' कह दिया। मुझे लगता है कि ज्योत्सना के विषय में कुछ बताने के लिए आप लालायित हैं।''

बेटे का जवाब सुनते ही सुनंदा देवी को लगा, मानों उसके सिर से भारी बोझ उतर गया हो। ''कृष्ण, तुम बड़े भाग्यशाली हो। तुम्हें अच्छी लगी कन्या को अपने साथ ले आये। ज्योत्सना की प्रबल इच्छा है कि वह अपने कुशद्वीप की रानी मात्र बने। तुम्हारी रानी बनने की इच्छा उसमें नहीं है।''

यह सुनकर कृष्णभूपति के आनंद की सीमा न रही। उसने कहा, ''माँ, आपके कहे अनुसार मैं ही नहीं बल्कि ज्योत्सना भी भाग्यशाली है। जिस दिन वह कुशद्वीप निकलना चाहती है, उसी दिन उसे और उसके परिवार को भेजने का आवश्यक प्रबंध करूँगा। थोड़ी सेना भी उसके साथ-साथ भेजूँगा, जिससे उसे शत्रु का भी भय न हो।''

''हमने सोचा नहीं था कि इतनी गंभीर समस्या इतनी आसानी से सुलझ जायेगी।'' सुनंदादेवी ने लंबी सांस खींचते हुए कहा।

कृष्णभूपति ने तब हंसते हुए कहा, ''माँ, इसके साथ मेरी एक प्रधान समस्या का भी परिष्कार हो गया। उन परिस्थितियों में मैंने कलाकौमुदी से कह भी दिया था कि वह राजमहिषी नहीं बन सकती, अर्धांगिणी ही बनकर रह सकती है। अब वह मेरी इष्टदेवी ही नहीं बल्कि राजमहिषी भी है। यह शुभ समाचार उसे अभी सुना आता हूँ।'' कहते हुए वह वहाँ से तेज़ी से चला गया।

''शुभ हो पुत्र'' कहकर सुनंदा देवी ने भूपति को आशीर्वाद दिया।

दरबारियों को नरेन्द्रदेव का मुखौटा उतारने के लिए कहा। परन्तु नरेन्द्रदेव वहाँ था ही नहीं। रविन्द्रदेव आतुर हो उठा।

भयभीत चीत्कार सुनाई पड़ी। चारों ओर खड़े लोग स्तंभित रह गए।

राजा को गुस्सा आया।

क्या नरेन्द्रदेव गरुड़ा की भाँति मुखौटा लगाए हुए है? कितनी लज्जा की बात है।

महाराज, ऐसा जान पड़ता है कि यह गरुड़ा कोई एक व्यक्ति नहीं है, बल्कि जनता का राज्य प्रशासन के खिलाफ कोई सामूहिक आन्दोलन है।

जो तुम कह रहे हो, यदि वह सत्य है, तो इसकी जाँच करवाना बहुत जरूरी है। इसकी जानकारी हासिल करके रिपोर्ट मुझे बताओ।
जी महाराज! यदि लोगों की शिकायतें जायज हैं तो हमें अपने कानून बदलने होंगे।
मुझे भी कुछ छः महीनों का समय चाहिए।
तुम्हें यह समय दिया गया। आदित्य तुम अपना कार्य आरम्भ करो!

गरुड़ा रामसिंह से मिला। वहीं एक आदमी है, जिसे गरुड़ा की सचाई मालूम है।
हमें कुछ और नौजवानों की आवश्यकता होगी। जिससे हम नदी के पास की जमीन को अच्छा बना सकें।
श्रीमान, यह कोई समस्या नहीं है।

कुछ सप्ताहों बाद राज्य में एक उत्सव मनाया गया।

इतनी खुशी मनाने जैसी बात क्या है? वे आदित्य की इतनी प्रशंसा क्यों करते हैं? वह सिर्फ राजा की आज्ञा का पालन कर रहा है।

रविन्द्र बिना कारण परेशान हो रहा है। चन्द्रपुरी की प्रशासनिकता में शीघ्र ही परिवर्तन आयेगा !

आदित्य की देखरेख में वह जमीन उपजाऊ बनाई जाने लगी। और उन लोगों को दी गयी जिनके पास जमीन नहीं थी।

सुबह होने में अब देर नहीं है।
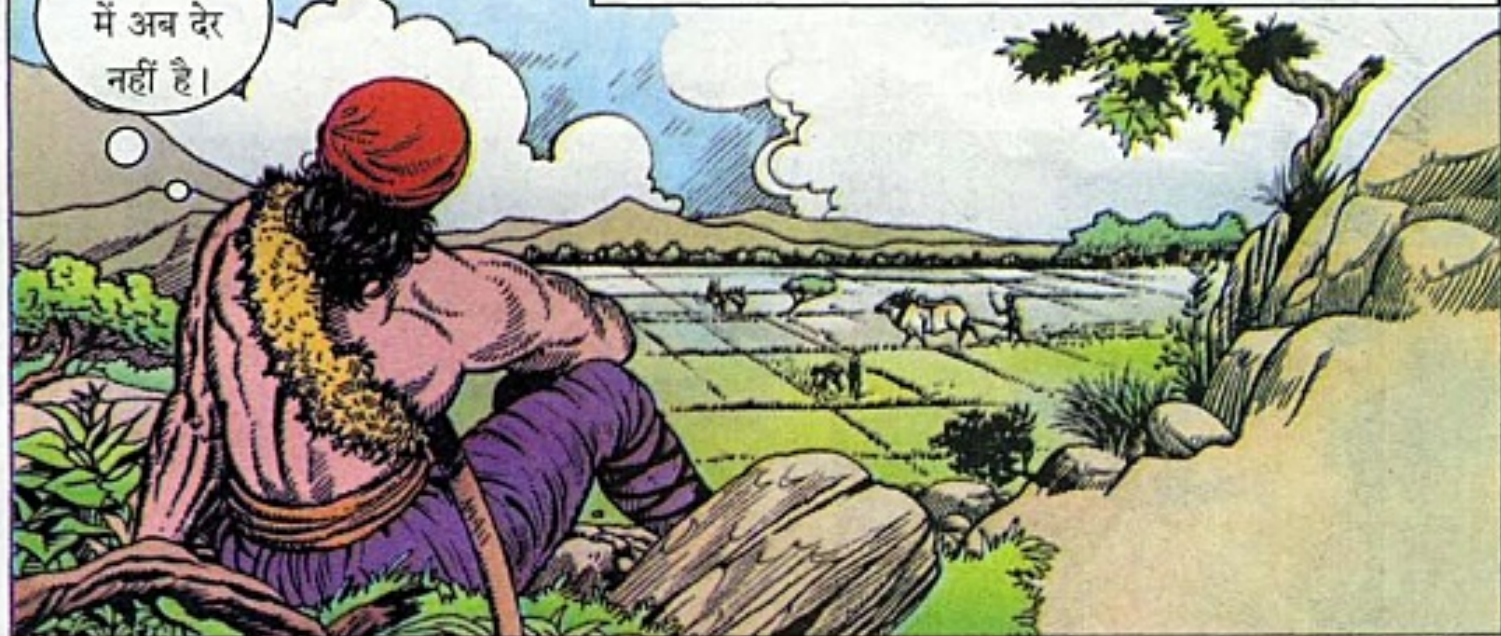
चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

जून अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

रूपेश कुमार देवराय
२६, तिलक नगर,
खाण्डवा, मध्य प्रदेश.

विजयी प्रवृष्टी
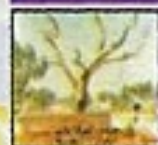
देख वृक्ष की उदारता मानवता भी शरमाई
"पेड़ की हरियाली अपने घर की छत बन लहराई ।"

चंदामामा वार्षिक शुल्क

भारत में १२०/- रुपये डाक द्वारा
Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam